धर्मे ते धीयतां बुद्धिः
मनस्ते महदस्तु च

भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी
संस्थापक

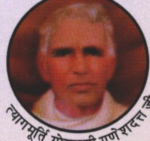

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी
संयोजक

सनातन संवर्धिनी

चतुर्थ वर्ष - द्वितीय अंक

दिसम्बर - 2018

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब,(पंजी.) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र: दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालय: गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष: 0172-2543283
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार: 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. आर. पी. विज

'अर्धकुम्भ महापर्व : प्रयागराज'

भारत भूमि धर्म भूमि है। इस पावन भूमि पर असंख्य तीर्थस्थल हैं। इन तीर्थ स्थलों पर ग्रहों की विशेष गोचरीय स्थितियों के आधार पर समय–समय पर अनेक धार्मिक उत्सव मनाने की प्राचीन परम्परा है। ये परम्परागत धार्मिक उत्सव शास्त्र प्रतिपादित 'विधि' (करणीय कर्म का विधान) और 'निषेध' (अकरणीय अथवा वर्ज्य कर्म का परित्याग) का संदेश देते हुए हमें विधि अर्थात् शास्त्रीय कर्म में प्रवृत्त और निषेध अर्थात् अशास्त्रीय कर्म से निवृत्त करते हैं। इस प्रकार ये पर्व और उत्सव मानव को एक प्रकार से शास्त्रीय अनुशासन और सामाजिक मर्यादाओं में नियन्त्रित करते हुए उसे अभ्युदय और निःश्रेयस् प्राप्ति की ओर उन्मुख करते हैं।

इन तीर्थ स्थलों पर विशेष पर्वों और उत्सवों के अवसर पर देश के कोने–कोने से लाखों श्रद्धालु स्नान, दान, यज्ञ–अनुष्ठान, पूजा–पाठ एवं जप आदि सुकृत्यों के सम्पादन द्वारा पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। इन अनगिनत तीर्थ स्थलों में कुम्भ स्थलों का और पर्वों में कुम्भ पर्वों का सर्वातिशायी माहात्म्य शास्त्रों में वर्णित है। विष्णु पुराण के अनुसार –

अश्वमेघसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।
त्रिवेणी कुम्भेअस्मिन् नरकपातश्च न भवेत्।

अर्थात् एक हजार अश्वमेघ यज्ञ, सौ वाजपेय यज्ञ और लाख बार सम्पूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो पुण्य फल मिलता है वह फल श्रद्धालु मानव को कुम्भ पर्व में स्नान मात्र करने से प्राप्त हो जाता है। त्रिवेणी अर्थात् प्रयागराज के कुम्भ में स्नान करने से तो वह सदा–सदा के लिए नरकपात के भय से मुक्त हो जाता है। हमारे शास्त्रों में कार्तिक स्नान, माघ स्नान और वैशाख स्नान का अपार महत्त्व वर्णित है। पर यदि मानव को इन तीनों ही मास के स्नानों का एक साथ अनन्त गुणा फल प्राप्त करना हो तो उसे कुम्भ स्नान करना चाहिए – सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानं शतानि च।

वैशाखे नर्मदा कोटि कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।

अर्थात् एक हजार कार्तिक मास के स्नान, सौ माघ मास के स्नान तथा एक करोड़ वैशाख मास के नर्मदा स्नान से जो फल मिलता है वह एक कुम्भ पर्व में स्नान करने से मिल जाता है। इस प्रकार कुम्भ पर्व एवं अर्धकुम्भ पर्व पर स्नान, दान, जप–तप आदि का अनन्त गुणा फल शास्त्रों में वर्णित है। इस अनन्त एवं अक्षय पुण्य से जन्म–जन्मान्तर के संचित पाप विनष्ट होते हैं तथा पुण्यात्मा श्रेय और प्रेय की ओर अग्रसर होता है। इसी कारण न भारत वर्ष बल्कि विश्व के कोने–कोने से लाखों श्रद्धालु और भक्तजन इस विशिष्ट धार्मिक महापर्व पर हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन, नासिक नामक चार कुम्भ स्थलों पर स्नान कर अक्षय पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। इन कुम्भ महापर्वों पर भारतवर्ष के साथ–साथ विश्व के अन्य अनेक देशों की भिन्न–भिन्न धर्म, जाति, भाषा एवं संस्कृति में विश्वास करने वाली करोड़ों की संख्या में उपस्थित अपार भीड़ को देखकर यदि इन्हें विश्व जनसंगम या वैश्विक महापर्व कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। कुम्भपर्व का सम्बन्ध देवों और दानवों द्वारा अमृत–प्राप्ति के निमित्त किये गए समुद्र मन्थन के पौराणिक आख्यान से है जिसका संक्षिप्त कथा सार प्रस्तुत है –

सतयुग में दिति के पुत्र दैत्य (असुर) और अदिति के पुत्र देवताओं ने अजर–अमर होने के लिए अमृत–प्राप्ति हेतु सागर के मंथन का विचार किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने मन्दराचल को मथानी तथा शेषनाग के छोटे भाई वासुकि को रस्सी बना कर एक हजार वर्ष पर्यन्त समुद्र–मंथन किया। इस कार्य में कच्छप ने मन्दराचल रूपी मथानी के आधार का काम किया। वासुकि के मुख को असुरों ने तथा पूछ को देवताओं ने पकड़ा। क्षीर–सागर के मंथन से सर्वप्रथम महाविनाशकारी कालकूट महाविष निकला जिससे समस्त देव और दानव भयभीत हो गए। दोनों ने समवेत स्वर में देवेश्वर भगवान शिव का स्तवन किया। श्रीहरि के आग्रह और देव–दानवों की प्रार्थना पर सृष्टि के कल्याण की कामना से भगवान शिव ने उस महाविष का पान कर लिया। इसी आधार पर भगवान शिव को 'विषपायी' और 'नीलकण्ठ' आदि अभिधानों एवं विशेषणों से पुकारा जाता है।

समुद्र–मंथन से देवों और दानवों को कौस्तुभ मणि, पारिजात वृक्ष, अप्सराएँ, वारूणी, सुरभि गौ, उच्चैः श्रवा घोड़ा, ऐरावत (इन्द्र का हाथी) आदि दिव्य रत्नों की प्राप्ति हुई। अन्त में अमृत से भरे हुए कुम्भ को उठाये हुए धन्वन्तरि देव अवतरित हुए। समुद्र से निकले अमृत–कुम्भ को पाने के लिए देवताओं एवं असुरों में संघर्ष की स्थिति पैदा हो गई। यदि असुरों ने अमृत–पान कर लिया तो वे सदा के लिए अजर और अमर हो जाएँगे तथा देव जाति का जीना दूभर कर देंगे। फलतः समस्त देवों ने इन्द्र के पुत्र जयन्त को अमृत–कुम्भ की रक्षा का दायित्व सौंपा। देवों और दानवों में अमृतकलश को प्राप्त करने के लिए बारह दिव्य दिनों (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध होता रहा। ध्यान रहे कि पृथ्वी का एक वर्ष देवों का एक दिन होता है। जयन्त अमृत से परिपूर्ण कुम्भ को लेकर कभी भूलोक तो कभी देवलोक भागता रहा। राक्षस लोग जयन्त का पीछा करते रहे। युद्ध के दौरान जयन्त ने बारह स्थलों पर अमृत–कलश रखा। इनमें आठ स्थल देवलोक में हैं और चार स्थल भूलोक (भारतवर्ष) में स्थित हैं जो निम्नलिखित हैं –

1. गंगातट पर हरिद्वार
2. गंगा, यमुना और सरस्वती के संगमस्थल पर प्रयागराज
3. गोदावरी तट पर नासिक
4. शिप्रा तट पर उज्जैन

देवों और दानवों की छीना–झपटी में इन चारों स्थलों पर अमृत की कुछ एक बूंदें गिरी थीं। इन स्थलों पर दिव्य अमृत की बूंदों के गिरने के समय सूर्य, गुरू और चंद्र की जो–जो गोचरीय स्थिति थी, इन तीनों के उसी गोचरीय स्थिति में आने पर इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाए जाते हैं। ऐसी विशेष गोचरीय स्थिति प्रत्येक स्थल के लिए 12 वर्ष बाद आती है। फलतः प्रत्येक स्थल पर 12 वर्ष बाद कुम्भ पर्व मनाया जाता है। कुम्भ पर्व के पूर्ण वृत्तान्त को जानने के लिए यह जान लेना भी आवश्यक है कि अमृत–कलश को सुरक्षित रखने के लिए इन्द्र के पुत्र जयन्त के साथ–साथ देवगुरू बृहस्पति, सूर्य तथा चन्द्र का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सूर्य देव ने अमृत से भरे कलश को फूटने से बचाया, बृहस्पति ने उसे भूमि पर गिरने से बचाया तथा चन्द्रमा ने अमृत को पूरा छलकने से बचाया। इस कारण इन तीन ग्रहों में विशेष सम्बन्ध होने पर कुम्भ–महापर्व मनाया जाता है।

कुम्भ महापर्वों की विशेष गोचरीय स्थिति इस प्रकार है –

1. हरिद्वार कुम्भ महापर्व :– गुरू की कुम्भ राशि में स्थिति होने पर सूर्य के मेष राशि में संक्रमण काल के समय हरिद्वार में कुम्भ महापर्व मनाए जाने का शास्त्रीय विधान है –पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।

गंगाद्वारे भवेत् योगः कुम्भनामा तदोत्तमः।।

ऐसा योग प्रत्येक 12 वर्ष बाद सामान्यतः 13–14 अप्रैल को घटित होता है।

2. प्रयागराज कुम्भ महापर्व :–गुरू के वृष राशि में तथा सूर्य के मकर राशि में स्थित होने पर माघ मास की अमावस्या के दिन प्रयागराज में कुम्भ महापर्व मनाया जाता है – मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ।

कुम्भयोगो भवेत् तत्र प्रयागे हि अतिदुर्लभे।।

3. उज्जैन कुम्भ महापर्व :–वैशाख मास की पूर्णिमा को सूर्य की मेष में तथा गुरू की सिंह राशि में स्थिति होने पर उज्जैन में कुम्भ महापर्व मनाया जाता है।

4. नासिक कुम्भ महापर्व :– सूर्य और गुरू दोनों की सिंह राशि में स्थिति होने पर भाद्रपद मास की अमावस्या को गोदावरी तट पर नासिक (त्र्यम्बकेश्वर) में कुम्भ महापर्व मनाया जाता है –

सिंहराशिगते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्यां भवेत् कुम्भः पुनरावृत्तिवर्जनः।।

महाकुम्भ पर्वों की भाँति अर्द्धकुम्भ पर्वों को मनाने की परम्परा भी प्रचलित है। पर अर्द्धकुम्भ पर्व केवल हरिद्वार और प्रयागराज में ही मनाए जाते हैं। उज्जैन और नासिक में अर्द्धकुम्भ मनाने की परम्परा नहीं है। हरिद्वार और प्रयागराज में अर्द्धकुम्भ इन तीर्थस्थलों पर होने वाले कुम्भ महापर्वों से छह वर्षों के अन्तराल से मनाए जाते हैं। इन अर्द्धकुम्भ पर किए गए स्नान, दान, जप–तप और यज्ञ आदि का फल भी कुम्भपर्व जैसा ही अनन्त फलदायी है।

विक्रम संवत् 2069 में 10 फरवरी, 2013 को माघ मास की अमावस्या के दिन गुरू के वृष राशि एवं सूर्य के मकर राशि में स्थित होने पर गंगा, यमुना एवं सरस्वती के त्रिवेणी संगम पर प्रयागराज में बड़ी धूम–धाम से कुम्भ महापर्व मनाया गया। इस महापर्व में सनातन धर्म के पुरोधा परम पूज्य शंकराचार्यों, विभिन्न अखाड़ों के मठाधीशों एवं महामण्डलेश्वरों, हजारों संत–महात्माओं के साथ–साथ देश विदेश के करोड़ों श्रद्धालु भक्त जनों ने परम पावन त्रिवेणी संगम पर स्नान कर अखण्ड पुण्य लाभ अर्जित किया। इस वर्ष विक्रम संवत् 2075 में कुम्भ पर्व के ठीक छः वर्ष पश्चात् गुरू की वृश्चिक राशि में तथा सूर्य की मकर राशि में स्थिति होने पर माघ मास की अमावस्या को 4 फरवरी 2019 को प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर अर्द्धकुम्भ महापर्व का योग बन रहा है। कुम्भ एवं अर्द्धकुम्भ के पर्व पर गंगा, यमुना एवं सरस्वती के दिव्य जलों में अमृतत्व का समावेश रहता है। इसी कारण शास्त्रों में इन पर्वों में त्रिवेणी संगम के स्नान का पुण्य फल अनन्त गुणा बताया गया है और कहा गया है कि कुम्भ योग में त्रिवेणी संगम पर स्नान–दान, जप–तप आदि से जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। क्योंकि इस कुम्भ स्नान से जीवात्मा के विगत एक कल्प के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। भारतीय काल गणना में एक कल्प ब्रह्मा का एक दिन होता है और इसका काल परिमाण हमारे चार सौ बत्तीस करोड़ वर्ष होते हैं –

पश्चिमाभिमुखी गंगा कालिन्द्या सह संगता।
हन्ति कल्पकृतं पापं सा माघे नृप दुर्लभा।।

इस वर्ष प्रयागराज में अर्द्धकुम्भ का पर्व सोमवती अमावस्या, महोदय योग और सर्वार्थसिद्धि योग होने से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बना हुआ है। ऐसे दुर्लभ योग कभी–कभी बनते हैं। इसमें असंख्य श्रद्धालुजन, योगी–तपस्वी, साधु, संन्यासी, पंचदस अखाड़े, वैष्णव, उदासीन एवं निर्मल सम्प्रदाय के सन्त–महात्मा, त्रिवेणी संगम पर सामान्य तथा शाही स्नानार्थ अवश्य पधार रहे हैं। भक्त जनों को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

इस वर्ष अर्द्ध कुम्भ का मुख्य स्नान 04 फरवरी 2019 को माघ मास की अमावस्या को होगा। अर्द्ध कुम्भ के कुछ अन्य स्नानों की तारीखें इस प्रकार हैं –

14 जनवरी 2019	सोमवार	मकर संक्रान्ति अर्धकुम्भ प्रारम्भ	15 जनवरी 2019	मंगलवार	मकर संक्रान्ति जन्य पुण्यकाल
21 जनवरी 2019	सोमवार	पौष की पूर्णिमा	24 जनवरी 2019	गुरुवार	संकष्टी चौथ श्री गणेश जयन्ती
31 जनवरी 2019	गुरूवार	षट्तिलाएकादशी	04 फरवरी 2019	सोमवार	मौनीमावस मुख्यस्नान
10 फरवरी 2019	रविवार	बसंत पंचमी	16 फरवरी 2019	शनिवार	जयाएकादशी
19 फरवरी 2019	मंगलवार	माघी पूर्णिमा	02 मार्च 2019	शनिवार	विजयादशमी
04 मार्च 2019	सोमवार	महाशिवरात्रि	06 मार्च 2019	बुधवार	फाल्गुनी मावस
17 मार्च 2019	रविवार	आमलाएकादशी रविपुष्ययोग	20 मार्च 2019	बुधवार	होलिकादहनमहाविषुवदिन

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा और सनातन धर्म महावीर दल के समस्त सनातन परिवार को इस कुम्भ पर्व की हार्दिक बधाई देते हुए हमारा निवेदन है कि जो भी भक्तजन प्रयागराज कुम्भ पर जाना चाहते हैं वे सनातन धर्म महावीर दल के प्रधान आदरणीय महन्त स्वरूप बिहारी शरण जी से सम्पर्क स्थापित करें। सनातन धर्म महावीर दल प्रयागराज में कुम्भ मेले पर अपना शिविर लगाने के लिए प्रशंसनीय प्रयास कर रहा है जिसकी पूरी जानकारी प्रधान जी से प्राप्त की जा सकती है।

– डॉ नन्द किशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

सनातन धर्म : राजनीतिक परिष्करण के परिप्रेक्ष्य में

हमारा सनातन धर्म वर्तमान राजनीति की दशा और दिशा के परिष्करण में कैसी और कितनी भूमिका अदा कर सकता है ? इस पर विचार करने से पहले धर्म और सनातन धर्म के स्वरूप को अति संक्षिप्त रूप से जान लेना अप्रासंगिक नहीं होगा।

धर्म – 'धर्म' शब्द की उत्पत्ति 'धृञ् धारणे' धातु से 'अर्ति–स्तु–सु–हु–सृ–धृ' इस उणादि सूत्र द्वारा मन् प्रत्यय लगने से हुई है, जिसका अर्थ होता है – धारण किये जाने वाला अर्थात् आचरण करने योग्य। 'धर्म' भारतीय जन–मानस में बसा एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ बहुत ही गहरा एवं व्यापक है। अंग्रेजी का शब्द **'Religion'** तथा जर्मन का शब्द **'Sittlichke'** धर्म का पूर्ण एवं सच्चा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ है। हमारे अनेक प्राचीन ग्रंथों में स्थल–स्थल पर धर्म की महिमा एवं स्वरूप पर प्रकाश डाला गया। धर्म के मर्म को समझने के लिए हमें इन ग्रंथों का सहारा लेना पड़ता है। महर्षि कणाद 'वैशेषिक सूत्र' में धर्म के विषय में स्पष्ट घोषणा करते हैं – 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः' अर्थात् जिस आचरण के द्वारा मनुष्य की इस लोक में पूर्ण उन्नति हो और मृत्यु के अनन्तर भी उसे सद्गति प्राप्त हो, उसी आचरणीय विधान को धर्म कहते हैं।

महर्षि वेदव्यास जी ने भी अपने महाकाव्य – महाभारत में धर्म के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा की है। वे एक स्थान पर लिखते हैं – धारणाद्धर्म इत्याहुः धर्मेण विधृताः प्रजाः।

यः स्याद्धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः।।

अर्थात् धर्म धारण करता है, इसलिए इसे धर्म कहा गया है। धर्म प्रजा को धारण करता है। जो धारण की योग्यता रखता है, वही निश्चय धर्म है। मनु महाराज ने वेद, स्मृति, सदाचार और मन की प्रसन्नता को धर्म का लक्षण माना है –

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

अनेक प्राचीन ग्रंथों का अनुशीलन करने के पश्चात् डॉ. पी.वी. काने अपने ग्रंथ 'धर्मशास्त्र का इतिहास' में धर्म का लक्षण निर्धारित करते हुए लिखते हैं – **"Dharma came to mean peculiar duties and privileges of person as a member of the Aryan Community as a member of one of the Varnas or as in a partcular stage of life."**

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि धर्म मनुष्य जीवन की आचार संहिता है, जो हमें कर्त्तव्यपालन की शिक्षा एवं प्रेरणा देता है या व्यष्टि जीवन को समष्टि में विलीन करने का उपदेश देता है। इसके दो विशेष अर्थ हैं – प्रत्येक मनुष्य जीवन और उसके उत्कर्ष साधन के निमित्त अपने धर्म का पालन करता है। दूसरा धर्म आचरण और पवित्र भाव का निर्देशक भी है।

सनातन धर्म – 'सना भवः सनातनः' 'सना' एक अव्यय है, जिसका अर्थ है 'सदा'। जो सदा रहे, वह सनातन होता है। "सायं–चिरं प्राहे–प्रगे अव्ययेभ्यः ट्युटुलौ तुट् च" इस पाणिनि सूत्र से सना अव्यय को ट्युल् प्रत्यय होकर अनुबन्ध का लोप होकर "युवोरनाकौ" सूत्र से 'यु' का 'अन' होकर तुट् का आगम होने पर –सनातन' शब्द बनता है। इस प्रकार 'सनातन धर्म' का अर्थ हुआ – पदार्थ मात्र का सदा रहने वाला धर्म। हमारा वैदिक धर्म ही 'सनातन धर्म' है जो अनेक धर्म ग्रन्थों के माध्यम से आज भी जीवित हैं। श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार तो धर्म वही है जो वेदों में कहा गया है, उसका विपर्यय अधर्म है – वेद प्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद् विपर्ययः।

मन्वादि स्मृतियों, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में 'एषः धर्मः सनातनः' कहकर ही धर्म की विवेचना की गई है। श्री मध्वाचार्य शास्त्री सनातन धर्म को ही एकमात्र धर्म मानते हैं – 'सनातन धर्म ही एकमात्र धर्म है अन्य सब धर्माभास, मत, मजहब, **Religion,** जो हैं, सो हैं परंतु वे धर्म नहीं हैं क्योंकि धर्म तो अनादि अनन्त, ईश्वरीय, सदा एकरस और प्राणीमात्र का कल्याणकारक होता है।" श्री अरविन्द के अनुसार सनातन धर्म त्रिविध, त्रिमार्गगामी और त्रिकर्मरत है। ईश्वर ने अन्तरात्मा,

मानसिक जगत और स्थूल जगत इन्हीं तीन धामों में प्रकृति–सृष्ट, महाशक्तिचालित विश्व के रूप में अपने आपको प्रकट किया है। इन्हीं तीन धामों में उनके साथ युक्त होने की चेष्टा करना सनातन धर्म का त्रिविधत्व है। ज्ञान, भक्ति और कर्म इन तीन स्वतन्त्र या संयुक्त उपायों से उस युक्तावस्था को मनुष्य प्राप्त कर सकता है। इन तीन उपायों से आत्मशुद्धि करके भगवान् से युक्त होने की इच्छा करना ही सनातन धर्म की त्रिमार्गगामी गति है। सत्य, प्रेम और शक्ति – इन्हीं तीन वृत्तियों के विकास के द्वारा मानव जाति की क्रमोन्नति साधित होती आ रही है। सत्य, प्रेम और शक्ति के द्वारा त्रिमार्ग में अग्रसर होना ही सनातन धर्म का त्रिकर्म है।

सनातन धर्म की सीमा विस्तृत है, उसके अन्दर अनेक गौण धर्म निहित हैं। सनातन का अवलम्बन करके ही नाना प्रकार के परिवर्तनशील धर्म अपने–अपने कर्म में प्रवृत्त होते हैं। सनातन धर्म जगत के सनातन स्वभाव पर आश्रित है। अन्य धर्म नानाविध आधारगत स्वभाव के फल हैं। अन्य धर्म अनित्य या परिवर्तनशील होने के कारण उपेक्षणीय या वर्जनीय नहीं है बल्कि इन्हीं अनित्य धर्मों के आधार पर सनातन धर्म अनुष्ठित होता है। सनातन धर्म अखण्ड, सार्वभौम, अविनाशी, अनादि, अनन्त है और यही सत्य विश्वधर्म – **'The True Eternal Universal Faith'** है। हमारा धर्म भी सनातन धर्म है जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत तथा विभिन्न ऋषि–मुनियों, मनीषियों के कथनों के माध्यम से व्यक्त हुआ है।

सनातन धर्म और राजनीति – राजनीति का अर्थ है – राजा की नीति या शासन की नीति। यह वह नीति है जिसके अनुसार प्रजा का शासन, पालन और अन्य राज्यों से व्यवहार होता है। वर्तमान में धर्म और राजनीति का परस्पर संबंध सर्वाधिक चर्चा का विषय है। पाश्चात्य भौतिकवादी शिक्षा से पोषित बुद्धि वाले मनुष्य का मानना है कि 'धर्म' और राजनीति का परस्पर कोई संबंध नहीं है, बल्कि ये तो दो विपरीत बहने वाली धाराएँ हैं। वस्तुतः यह एकांगी और मनमाना तथ्य है। यदि हम धर्म और राजनीति की परिभाषाओं और सीमाओं पर गंभीरता से विचार करें तो स्पष्ट होता है कि धर्म से पोषित राजनीति ही सच्ची नीति है। धर्म से रहित राजनीति केवल दुर्नीति और कपटाचरण से पोषित कूटनीति ही है। राजनीति में धर्म की वैसी ही अनिवार्यता है जैसे शरीर के पोषण हेतु अन्न–जल की। सनातन धर्म राजनीति के स्वच्छीकरण में क्या भूमिका निभा सकता है ? यह जानने के लिए पहले वर्तमान राजनीतिक स्थिति को जान लेना आवश्यक है।

वर्तमान में जो राजनीति प्रचलित है उसका विवेचन यूनान और रोम में हुआ और फिर उसके बाद सोलहवीं शताब्दी से इसका तीव्र गति से विकास हुआ तथा यह भारतीय उपमहाद्वीप में भी फैल गई। पाश्चात्य राजनीति में राजधर्म **(Polity)** की बड़ी दुर्दशा हुई है। इटली में मैक्यावेली, एशिया में बिस्मार्क, फ्रांस में रिचल्यू तथा भारत में चाणक्य आदि ने राजनीति को स्वार्थ की भित्ति पर खड़ा कर दिया – भले ही वह राष्ट्रीय स्वार्थ हो। **'My Country, right or wrong'** के सिद्धान्त का अवलम्बन इन राजनीति–विशारदों ने करवाया है और यही कारण है कि आज विश्व की राजनीति **'Blood and Iron Policy'** पर चल रही है।

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था लोकतन्त्र पर आधारित है। यहाँ जनता अपना शासक स्वयं चुनती है। संविधान में शासक एवं जनता के कर्त्तव्य एवं अधिकार स्पष्ट रूप से अंकित हैं। परन्तु जब उनके पालन की बात आती है तो अन्ततः परिणाम शून्य ही मिलता है। शोचनीय विषय यह है कि यह स्थिति कैसे उत्पन्न हुई ? वर्तमान में जनसेवा का माध्यम राजनीति नोटों और वोटों का खेल बनकर रह गई है। विधान के अनुसार जो मन्त्रीमण्डल बने हुए हैं और आगे बनेंगे, कहने के लिए उनके हाथों में जनता के कल्याण का भार अर्पित किया गया है, पर जिस निर्वाचन–पद्धति के अनुसार वे चुने गये हैं, उस पद्धति में वे सच्चे लोकहित के कार्य नहीं करते। आज शासक वर्ग एक ही पद्धति पर कार्य करता है कि किसी तरह जनता को भूल–भुलैया में डालकर पुनः निर्वाचित हो जाये। हमारे विधान की तह में यह जन्मजात दोष है और मतदान के रहस्य को न समझने वाली भोली–भाली भारतीय जनता इस अभिशाप से त्रस्त है। राजनीति में सदाचार दूर की बात हो गई है। सत्तासीन दल के विधायकों, मन्त्रियों एवं उनके चहेतों में येन–केन प्रकारेण अधिकाधिक धनोपार्जन की होड़ लगी हुई है। जनता के हितों पर कुठाराघात करना राजनीतिज्ञों का विशेषाधिकार सा बन गया है। संक्षेप में वर्तमान राजनीति हमारी सनातन धर्मी राजनीति से बिल्कुल उल्ट है।

वर्तमान राजनीतिक मूल्यों में आई विकृतियों का परिष्करण केवल सनातन धर्म के सिद्धान्तों को अपनाकर किया जा सकता है। हमारे सनातन धर्म ग्रन्थों में राजा और प्रजा के कर्त्तव्यों का स्पष्ट निर्देश है। इन्हीं निर्देशों की अनुपालना से ही राज–धर्म का निर्वाह हो सकता है। यहाँ उक्त विषय को स्पष्ट करने के लिए शासक–शासित वर्ग के कर्त्तव्य एवं अधिकारों का विवेचन सनातन धर्मग्रन्थों के अनुसार अपेक्षित है। इस विवेचन से स्वतः स्पष्ट हो जायेगा कि हम सनातन धर्म के सिद्धान्तों पर चलकर वर्तमान राजनीति को कैसे स्वच्छ बना सकते हैं ?

राष्ट्र, राजा एवं प्रजा – राजनीति की यही तीन प्रमुख धुरियाँ हैं। वेदों में राष्ट्र के पाँच मूलाधार माने गये हैं – एक देश (भौगोलिक एकता) एक केन्द्रीय शासन (संगठनात्मक एकता) एक संस्कृति (भावना की एकता) एक सभ्यता (ऐतिहासिक एकता) और एक भाषा (अभिव्यक्ति प्रणाली की एकता)। उपर्युक्त वेद वर्णित पाँच आधारों को और भी संक्षेप में कहें तो देश और राज्य के संगठनात्मक ऐक्य का नाम 'राष्ट्र' है। राष्ट्र से भी वृहत्तर साम्राज्य होता है। इसके शासकों को क्रमिक उच्चता के अनुसार अधिराज, राजाधिराज, एकराट्, सम्राट, विराट् आदि कहा जाता है। ये पद गौरव के प्रदर्शन के लिए अनेक प्रकार के यज्ञ करते हैं। परंतु इनका वर्णन प्रस्तुत लेख की विषय सीमा से बाहर है।

राष्ट्र की रक्षा राजा का परम कर्त्तव्य है। वह भूमि की रक्षा करते रहने की पवित्र शपथ इन शब्दों में लेता है – ''पृथ्वीमाता! तुम मेरी हिंसा न करो और मैं तुम्हारी हिंसा न करुँ।'' भाव यह है कि देश और राजा परस्पर इस प्रकार हितैषी हों जैसे माता और पुत्र। किंतु देश एक भावात्मक सत्ता भी है और इस शब्द से जितना भौगोलिक सीमा का बोध होता है उनता ही या प्रसंगानुसार उससे भी अधिक 'प्रजा' का कथन होता है। सनातन धर्म में प्रजा को ही राष्ट्र माना गया है – ''राष्ट्राणि वै विशः।'' प्रजा के हित और संरक्षण में ही राष्ट्र की सुरक्षा है। प्रजा की समृद्धि धनधान्य सम्पन्नता, नीरोगता संक्षेप में शोभा और दीप्ति ही राष्ट्र का वास्तविक राष्ट्रत्व है। जब प्रजाहित ही राष्ट्र का सर्वस्व है तो प्रजा को ही अपना हित देखने का वास्तविक अधिकार है। वैदिक विचारधारा में राजा की विशेषता उसके धर्म संस्थापक रूप में है। प्रजाओं का सच्चा अधिपति धर्म है, राजा तो दण्ड (शासन) का वह रूप है जो धर्म की संस्थापना और रक्षा करता है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि राजा ईश्वर का रूप है। राजा को दैवी अधिकार नहीं है, उसमें मन्त्रों के द्वारा इन गुणों का आरोप किया जाता है। भाव यह है कि प्रजा की इच्छा या आज्ञा से राजा को शासनाधिकार दिया जाता है। आज शासक सत्ता को सुखोपयोग का साधन मानने लगे हैं। 'शतपथ ब्राह्मण' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि राजा को राज्य एक निक्षेप की भाँति सौंपा जाता है, स्व–उपभोग के लिए नहीं अपितु कृषि–वृद्धि के लिए और सर्वविध पोषणहार द्वारा प्रजा के क्षेम–सम्पादन के लिए –

इयं ते राष्ट्र यन्तासि यमनो ध्रुवोऽसि वरुणः।
कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा।।

राजा को निरंकुशता के पथ पर जाने से रोकने के लिए और उस पर नियन्त्रण रखने के लिए प्रजा की चार कार्यविधियों का वर्णन 'यजुर्वेद' में मिलता है – निर्वाचन, राज मर्यादा निर्धारण, मन्त्रि–परिषद् की अधिकार सम्पन्नता तथा सभा–समितियों का अंकुश। इससे स्पष्ट होता है कि राजा की स्थिति प्रजा पर निर्भर करती हे – 'विशि राजा प्रतिष्ठितः' प्रजा ही राजा को चुनती है – 'त्वां विशो वृणतां राज्याय और वही उसे पद पर बनाये रखती है। प्रजा चाहे तो राजा को पदच्युत भी कर सकती है। अतः राजा का यह परम कर्त्तव्य है कि वह प्रजा को प्रसन्न रखे और उसकी भक्ति करे, जिससे प्रजा उसे चाहती रहे – 'विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु'।

हमारे सनातन धर्म के अनुसार दण्ड शक्ति की मूल अधिष्ठात्री प्रजा ही है। राजा दण्ड से अतीत होते हुए उस दण्ड को धारण करता है जो धर्म का रक्षक है, राजा दण्ड को धारण करने वाला मात्र है, दण्ड का विधाता या मूलस्रोत नहीं। यद्यपि प्रभुसत्ता प्रजा निहित है, फिर भी दण्ड शक्ति राजा को देकर उसे अदम्य बनाकर प्रजा स्वेच्छा से राजाज्ञा–पालन का व्रत लेती है – 'प्रजापतेः प्रजा अभूम।' इस प्रकार राजा और प्रजा के परस्पर अधीन रहने से ही कोई राष्ट्र उन्नत, निर्द्वन्द्व और व्यवस्थित रहता है –

मन्त्रि–परिषद् – मन्त्रि–परिषद् राज–व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। वर्तमान में मंत्री लोग अपने कर्त्तव्य–निर्वाह के स्थान पर मुख्य शासक की प्रसन्नता को अधिक महत्त्व देते हैं। हमारे सनातन धर्म में मन्त्रि–परिषद् के स्वरुप एवं कर्तव्यों का स्पष्ट निर्देश है जिनका पालन करके मन्त्रि–परिषद् के मूल उद्देश्य की प्राप्ति हो सकती है। राजा मन्त्रि–परिषद् पर आश्रित रहता है, इससे पथ–प्रदर्शन प्राप्त करता है। अतः सनातन ग्रंथों में इन्हें 'रत्निन' कहा गया है। ये राजकर्तृ और राजकृत् होते हैं अर्थात् ये स्वयं राजा न होते हुए भी राज्य करने वाले होते हैं। ये शासन के समस्त मुख्य कार्यों के संचालक होते हैं और शासकीय विभागों के अधिपति हुआ करते हैं। इनका परामर्श लेना राजा का कर्त्तव्य है। सत्ता में बने रहने के लिए राजा को चाहिए कि वह मन्त्रिपरिषद् को अपने अनुकूल रखे। हमारे सनातन धर्म के अनुसार – जो मन्त्री स्वामी को सही बात नहीं बतलाता, वह खराब है, जो हित की सच्ची बात नहीं सुनता वह स्वामी अच्छा नहीं होता। जहाँ राजा और मंत्री एक दूसरे के अनुकूल होते हैं वहाँ पर सम्पत्ति सब प्रकार से निवास करती है –

स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संश्रृणुते स किं प्रभुः।
सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः।। (भारवि किरातार्जुनीयम् 1/5)

न्याय एवं अर्थनीति :– वर्तमान राजनीति में ये दोनों ही क्षेत्र शोचनीय स्थिति में है। सनातन धर्म के अनुसार अन्यायी को दण्ड देना ,चाहे वह प्रिय ही क्यों न हो, राजा का परम कर्त्तव्य है। वेदव्यास जी ने अन्यायी को दण्ड न देने वाले राजा को डाकू कहा है – न राजा राजवत् किंचित् समाचरति कीचके।

दस्यूनामिव धर्मस्ते न हि संसदि शोभते।।

सनातन धर्म के अनुसार राजा की अर्थनीति –मालाकार वृत्ति' पर आश्रित होनी चाहिए। माली जिस प्रकार पौधों को नष्ट न करके पुष्प चयन करता है राजा को भी उसी प्रकार प्रजा को पीड़ित न करके कर ग्रहण करना चाहिए। दुग्ध–प्राप्ति की आशा में गाय का स्तन नहीं काटना चाहिए। 'गरुड़ पुराण' में कहा गया है कि सूर्य जिस प्रकार जल खींचकर सृष्टि के उपकार हेतु उसे पुनः वर्षा के रूप में बरसा देता है, राजा को भी उसी प्रकार राजस्व ग्रहण करके प्रजा के हितार्थ उसे व्यय करना चाहिए। अर्थनीति की इतनी सटीक और विशद व्याख्या शायद ही कहीं मिले। यदि हमारे राजनेता इस नीति को अंगीकार कर लें तो भारत का दारिद्रय दूर होते देर नहीं लगेगी।

निष्कर्ष – उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट होता है कि हमारे सनातन धर्म में निहित सिद्धांतों के आधार पर राजनीति आश्रित हो तो सतयुग लौट सकता है। सनातन धर्म के अनुसार राजा में त्याग, सत्य, दया, न्याय आदि मानवोचित गुणों का समावेश होना चाहिए। राजनीति में व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा, स्वार्थ या मदमस्ती के लिए कोई स्थान नहीं होता। यहाँ राजनीति केवल एक निश्चित लक्ष्य प्राप्ति का साधन है और उस लक्ष्य का नाम है – 'लोक का अभ्युदय तथा कल्याण'। आजकल जिस नीचता और वज्रस्वार्थ को राजनीति कहा जाने लगा है वह सर्वदा जघन्य है। राजधर्म को सत्य और न्याय का पोषक होना चाहिए। राजनीति का उपयोग राजधर्म के निर्वहन के लिए होता है, इसलिए जब तक राजनीति का नियन्त्रण राजधर्म नहीं करेगा, तब तक राजनीति हेय और घातक रहेगी। आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव जाति के कल्याणार्थ सनातन धर्म के राजनीतिक मूल्यों को समझा एवं अपनाया जाये।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
शाह सतनाम जी छात्र महाविद्यालय, सिरसा (हरियाणा)

BHARAT RATNA MAHAMANA PANDIT MADAN MOHAN MALVIYA

25 December 1861 - 12 November 1946

(A Few Facts About His Life, Religion & Contributions)

Malviya ji was born in Allahabad on **25th December, 1861** in a Brahmin family. He was educated first at two Sanskrit Pathshalas, then later matriculated in 1879 from Muir Central College, now known as Allahabad University, completed his B.A. at the University of Calcutta. In July 1884 he started his career as an Asstt. Master at Government High School Allahabad. Later he left his school and did L.L.B. from Allahabad University and in 1891 he started practising Law first in Allahabad district, then in 1893 in Allahabad High Court. On his 50th Birthday on 25 December 1911 he resolved to serve the case of social service he renounced his well-established practice of Law for ever. He was an important Freedom Fighter. So when 177 freedom fighters were convicted to be hanged in the Chauri-Chaura Case, Malviya ji worried so much that despite his vow, he unexpectedly appeared before the Court and got acquitted 156 active freedom fighters. The remaining 15 also were recommended for clemency by the High Court, whereafter their sentences were also commuted from death to life-imprisonment. During arguments the then Chief Justice Hon'ble Sir Griwood Mears bowed thrice to Malviya ji as a Mark of Respect for the sheer brilliance of his arguments. Mahamana is most remembered as the founder of Banaras Hindu University (BHU) at Varanasi in 1916 and was Vice-Chancellor of BHu from 1919-1938. Pandit ji was posthumously conferred with **Bharat Ratan** on 24th December 2014 a day before his 153rd Birth Anniversary.

Malaviya ji was an orthodox Sanatanist but he was never sectarian or fundamentalist. According to him India is not a country of the Hindus only. It is a country of the Muslims, Christians and the Parsees too. There can't be contradiction between truly religious men belonging to different faiths and communities. He started the tradition of **Aarti at Harki Pauri**, Haridwar to the sacred Ganga river which is performed till date.

In conclusion, it can be said that Malaviya ji was a great religious and social thinker of India like Swami Vivekananda. He was neither a Theorist nor a Propagandist, but was a Practical Philosopher who put all his thoughts to action. **LET US SALUTE HIM.**

Dr. R.P. Vij
Administrator
Sapt Rishi Ashram, Haridwar

भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी

25 दिसम्बर 1924 – 16 अगस्त 2018

(अटल जी की कुछ कवितायें)

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरे प्रलय की घोर घटाएँ
पावों के आगे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ
निज हाथों में हँसते – हँसते
आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा ?

क्या हार में, क्या जीत में,
किंचित् नहीं भयभीत मैं
कर्त्तव्य पथ पर जो भी मिलता
यह भी सही वो भी सही
वरदान नहीं मांगूगा
हो कुछ पर हार नहीं मानूंगा ?

बात ऐसी नहीं कि कोई गम ही नहीं,
दर्द अपने – पराए कुछ कम भी नहीं
प्यार इतना पर परायों से मुझको मिला,
न अपनों से बाकी है कोई गिला
हर चुनौती से दो हाथ मैंने किये,
आँधियों में जलाये हैं बुझते दिए ?

उजियारे में, अंधकार में, कल कहार में
बीच धार में, घोर घृणा में, पूत प्यार में
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में
जीवन के शत–शत आकर्षक
अरमानों को ढलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा ?

संकलन कर्त्ता
डॉ. आर. पी. विज
प्रशासक
सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार

श्रीमद्भागवत महापुराण में योग के विविध आयाम

योग ब्रह्मा द्वारा निर्दिष्ट एक शाश्वत विज्ञान है, साधना पद्धति है। ऋषियों, तपस्वियों तथा योगियों द्वारा बतायी गई श्रेष्ठ विद्या है। यह विशेष ज्ञान जीवन के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को दर्शाने तथा विभिन्न भौतिक व आध्यात्मिक तथ्यों को साकार करने वाला है। 'योग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'युज' धातु से हुई है जिसका अर्थ है– जोड़ना। इस एकीकरण का अर्थ जीवात्मा तथा परमात्मा के एकीकरण से लिया जाता है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में योग को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते हुए कहा है– तपस्वियों से योगी श्रेष्ठ, ज्ञानियों से योगी श्रेष्ठ है, कर्मयोगियों से भी योगी श्रेष्ठ है इसलिए है अर्जुन! तू योगी बन। योग एक ऐसा उपाय है, जिसके द्वारा अपने साधारण मानसिक क्लेशों एवं जीवन की अन्यान्य कठिनाइयों का बहुत सुविधापूर्वक निराकरण किया जा सकता है। जीवन के विस्तृत अध्ययन के बाद ऋषियों ने यह तत्त्वदर्शन खोजा और प्रतिपादित किया कि व्यष्टि और समष्टि से संयोग हुए बिना शांति नहीं प्राप्त हो सकती। योग का अर्थ ही है व्यष्टि का समष्टि से तादात्म्य, लघु का विभु, अणु का महत्, जीव का परमात्मा से पूरी तरह से जुड़ जाना, एकरस हो जाना।

योग ऋषियों, तपस्वियों तथा योगियों द्वारा बनी एक ऐसी श्रेष्ठ विद्या है जो तन को सुगठित, मन को नियंत्रित और आत्मा को उद्भावित करती है। इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य के सभी संशय दूर हो जाते हैं और वह अपने जीवन में परमलक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। अपनी ऊँचाई के चरम बिंदु पर पहुँचकर योग आत्मा और परमात्मा के मिलन का अप्रतिम माध्यम बन जाता है जैसे कि महर्षि पतंजलि ने योग को परिभाषित किया है– ''योगश्चित्तवृत्ति निरोधः''। अर्थात् समस्त चित्तवृत्तियों (मनोव्यापार) का निरोध करना ही योग है। गीता में कर्मों के कौशल को योग कहा गया है, ''योग कर्मसु कौशलम्''। उपनिषदों में प्रायः जीवात्मा एवं परमात्मा के संयोग को योग कहा गया है। उपनिषदों के अनुसार जीवात्मा स्वाभाविक रूप से चैतन्य एवं सभी प्रकार की उपाधियों से अपरिछिन्न है, तथापि वह शरीर, चित्त एवं इंद्रियों से सम्बद्ध होकर भौतिक पदार्थों में अहंकार की प्रतीति से युक्त होकर कर्मों में प्रवृत्त होता है। इस प्रकार बन्ध की श्रृंखला में वह बद्ध होता जाता है। योग साधना द्वारा जीव में भौतिक पदार्थों के प्रति अहंकार की पूर्ण निवृत्ति होने पर जीवात्मा इन प्रपंचों से मुक्त होकर अपने चैतन्य स्वरूप से अवगत हो जाता है। फलस्वरूप अनादि बन्ध की श्रृंखला से मुक्त होकर परमानंदमय स्वरूप में आत्मलीन हो मुक्तिसुख का अनुभव करता है। यही योग की स्थिति है।

श्रीमद् भागवत में भगवान श्री कृष्ण ही सबकी आत्मा हैं, वह योग सांख्य, सत्य, ऋत, तेज, श्री, कीर्ति और दम इन सबके परम गति व परम अधिष्ठान हैं। इसीलिए उद्धव कहते हैं– आप ही समस्त योगियों की गुप्त पूंजी, योगों के कारण और योगेश्वर हैं। आप ही समस्त योगों के आधार, उनके कारण और योग स्वरूप ही हैं (श्रीमद्भागवत 11/7/14)। अतः श्रीमद् भागवत में योग पूर्णता की वह अवस्था है जिसमें वृत्ति कृष्णाकार हो जाती हैं। पातंजल योग सूत्र में चित्त की वृत्ति के निरोध को योग कहा गया है (प.यो.सू. 1/2)। परन्तु भागवत के अनुसार जो साधक भगवान श्री कृष्ण का आश्रय लेकर उनके द्वारा कही गई योग साधना में संलग्न रहता है उसकी सारी कामनाएँ नष्ट हो जाती हैं और वह आत्मानन्द की अनुभूति (योग) को प्राप्त करता है (श्रीमद्भागवत 11/28/44)। इस प्रकार योग के चरमावस्था में चित्तवृत्ति शून्य नहीं अपितु कृष्णरूपी परमब्रह्म वृत्ति के साथ एकाकार हो जाती है।

वस्तुतः योग शब्द का विस्तार स्वयं व्यापक है, जिसके अंतर्गत योग की क्रियापरक पद्धतियां भी आती हैं। यद्यपि योग के उन आयामों या परंपराओं का पूर्ण विवरण तो श्रीमद्भागवत में प्राप्त नहीं होता परंतु भागवतकार ने सांकेतिक ढ़ंग से इनकी चर्चा अवश्य की है। इन्ही संकेतों के आधार पर योग के विभिन्न आयामों का उल्लेख किया गया है जिसकी चर्चा करते हुए भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद् भागवत में उद्धव से कहते हैं– योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयोविधित्समा।

ज्ञानं, कर्म च भक्तिश्च नोपायोऽन्यःकुत्रचित्।। (श्रीमद्भागवत 11/20/6)

अर्थात् मैंने ही वेदों में एवं अन्यत्र भी मनुष्यों का कल्याण करने के लिए अधिकारी भेद से तीन प्रकार के योग कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का उपदेश किया है। मनुष्य के परमकल्याण के लिए योग के अतिरिक्त और कोई उपाय कहीं नहीं है।

श्रीमद् भागवत पुराण के प्रथम अध्याय में ज्ञानयोग का वर्णन प्राप्त होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है– 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' अर्थात् इस संसार में ज्ञान से बढ़कर पवित्र वस्तु और कोई नहीं है। तात्त्विक रूप से परम सत्ता का साक्षात्कार ही यथार्थ व व्यापक ज्ञान है। श्रीमद् भागवत में इसी तात्त्विक विश्लेषण के आधार पर ज्ञानयोग की चर्चा की गई है। परम तत्त्व का ज्ञान प्राप्त कराने के लिए और जन्म–मृत्यु रूप संसार से मुक्ति का मार्ग बताने के लिए रूपक के माध्यम से भी उसी तत्त्व का वर्णन किया गया है। कथा कहानियों के माध्यम से भी उसी तत्त्व का निरूपण होता है (कल्याण 'भागवतांक' पृ. 62)। ज्ञानयोग के विशेष उपदेश के रूप में भागवत के अनेक अंशों का नाम लिया जा सकता है, जैसे– गीता रूप से हंसगीता, कपिलगीता, उद्धव के प्रति भगवान के उपदेश, चतुःश्लोकी भागवत आदि। भागवत के एकादश स्कंद के 24वें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण विदुर को सांख्य के रूप में ज्ञानयोग का उपदेश करते हैं। श्रीमद्भागवत में ज्ञानयोग की साधन प्रणाली के अन्तर्गत भी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के सहित निवृत्ति मार्ग को प्रकाशित किया गया है। जो पुरुष भक्ति पूर्वक इसके श्रवण, पठन और मनन में तत्पर रहता है वह मुक्त हो जाता है।

श्रीमद्भागवत का दूसरा आयाम कर्मयोग है। जिसके अन्तर्गत कर्म को फलभोग का हेतु माना गया है। विश्व में प्रत्येक वस्तु कर्म के नियम द्वारा संचालित होती है। कर्म के बिना एक क्षण भी नहीं रहा जा सकता, क्योंकि कर्म तो मनुष्य के क्रियाकलापों का समूह है। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं– कोई भी पुरुष किसी काल में क्षण मात्र भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता (श्रीमद्भगवद्गीता 3/5)। अतः कर्म आवश्यक है। परन्तु जिस भाव से जीव जैसा कर्म करता है वैसे ही शरीर से वह उस कर्म का फल भी भोगता है (मनुस्मृति 12/81)। इसलिए जीवन को कर्मवृत्ति से मुक्त करना मनुष्य का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

पुराण संदर्भकोष के अनुसार– शास्त्र विहित उत्तम क्रिया का नाम 'कर्म' है (पुराण संदर्भकोष पृ. 52)। श्रीमद्भागवत में इन्द्रियों द्वारा की जाने वाली क्रियाओं को कर्म कहा जाता है। श्रीकृष्ण कहते हैं– सत्, रज और तम ये तीन गुण इन्द्रियों को उनके कर्मों में प्रेरित करते हैं और इन्द्रियां कर्म करती हैं (श्रीमद्भागवत 11/10/31)। यद्यपि समस्त कर्ता, करण और कर्म श्रीकृष्ण की ही अभिव्यक्तियां हैं (श्रीमद् भागवत 11/13/19)। तथापि ईश्वर अपनी माया के द्वारा प्रपंच रूप से प्रतीत होता है जिसके कारण जीवों को अविद्या से कर्त्तापन की भ्रांति होती है। इसलिए योगी को समस्त कर्मों को भगवान श्रीकृष्ण में ही समर्पित करना चाहिए।

जब फल की अपेक्षा से कुछ कार्य किया जाता है तो उसे कर्म कहते हैं, परन्तु जब इसके विपरीत बिना किसी फलाकांक्षा के कार्य किया जाता है तो उसे कर्मयोग कहा जाता है। श्रीमद्भागवत में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिनके चित्त में कर्मों और उनके फलों से वैराग्य नहीं हुआ है, उनमें दुःख बुद्धि नहीं हुई है, वे सकाम व्यक्ति कर्मयोग के अधिकारी हैं (श्रीमद्भागवत 11/20/7)। लेकिन कर्म के संदर्भ में जितने भी विधि–निषेध है, उनके अनुसार तभी तक कर्म करने चाहिए, जब तक कर्ममय जगत और उससे प्राप्त होने वाले स्वर्गादि सुखों से वैराग्य न हो जाए अथवा जब तक श्रीकृष्ण की लीला–कथा के श्रवण, कीर्तन आदि में श्रद्धा न हो जाये (श्रीमद्भागवत 11/20/9)।

इस सृष्टि की रचना के बाद भगवान ने इस विशाल ब्रह्माण्ड के सुव्यवस्थित संचालन हेतु कुछ नियम एवं मर्यादायें (विधि–निषेध) स्थापित कीं तथा कर्मानुसार फल प्राप्ति का दृढ़ सिद्धान्त बनाया ताकि यह सारा ब्रह्माण्ड एवं इसमें निवास करने वाले जीवधारी एक निश्चित विधि–विधान के अनुसार चल सके। ये व्यवस्था इतनी अकाट्य है कि भगवान भी इसका पालन करते हैं। भागवत में श्रेष्ठ कार्यों के लिए, उच्च महत्त्वाकांक्षाओं के लिए उसके समक्ष उत्तम जीव के गुणगान, उसके अनकहे लाभ और अनुग्रह की प्रशंसा का स्पष्ट विवरण मिलता है जिसके द्वारा कर्म निवृत्ति के पथ पर बढ़ते हुए कर्मयोग को प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण ने सत्संग से कर्म निवृत्ति की बात कही है– 'सत्संगः सर्वसंगापहो हि माम्'

(श्रीमद्भागवत 11/12/2)। अर्थात् जगत में जितनी आसक्तियाँ है उन्हें सत्संग नष्ट कर देता है। भगवान श्रीकृष्ण के सत्संग से अर्जुन की समस्त आसक्तियां समाप्त हो गयीं। राजराजेश्वर पुरूरवा के मन में सत्संग के द्वारा जब विरक्ति भावोद्गार उठने लगे, तब उसने उर्वशी लोक का परित्याग कर दिया (श्रीमद्भागवत 11/26/26)। ज्ञानोदय होने के कारण उसका मोह जाता रहा और उसने अपने हृदय में ही भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात्कार कर लिया। अतः कर्मयोग के पथ पर अग्रसर मनुष्यों को चाहिए कि पुरूरवा की भाँति सत्पुरूषों का संग करें।

योग के आयामों के क्रम में अगले आयाम में भक्तियोग का वर्णन किया गया है। श्रीमद्भागवत का आदि, मध्य और अन्त भक्तियोग परक चर्चा से ही वर्णित है। भक्ति भावों की पवित्रता है। भावनायें जीवन की जड़ हैं, मानवीय अस्तित्व का आधार है। जब ये सम्पूर्ण भावनायें भगवान को अर्पित कर दी जाती हैं तब यही भक्ति कहलाती है। भगवान के साथ सम्बन्ध जोड़ने के कारण इसे भक्तियोग कहकर योग की एक शाखा के रूप में स्वीकार किया गया है तथा ईश्वर प्राप्ति का सबसे सहज–सरल व स्वाभाविक मार्ग बताया गया है। महर्षि शाण्डिल्य ईश्वर के प्रति अपूर्व अनुराग को ही भक्ति कहते हैं (शाण्डिल्य भक्तिसूत्र–2)। महर्षि नारद भगवान के प्रति परम प्रेम को भक्ति मानते हैं (नारद भक्तिसूत्र–2)। महर्षि पतंजलि पातंजल योगसूत्र में ईश्वर प्रणिधान के रूप में मान्यता देते हुये कहते हैं– ईश्वर प्रणिधानाद्वा (पा.यो.सू. 1/29)। अर्थात् ईश्वर की शरण में जाकर ही जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

भागवत में यह घोषित किया गया है कि निर्गुण ब्रह्म की उपासना देहाभिमानी जीव के लिए अत्यन्त कष्टसाध्य है, जबकि सगुण ईश्वर की उपासना सहज साध्य है। अतः श्रीकृष्ण के रूप, गुण, लीलाओं का चिंतन, उनके नामों का कीर्तन, लीलाधामों का दर्शन और अर्चाविग्रहों का पूजन ही भागवतोक्त भगवद्भक्ति के प्रधान अंग हैं और यही तत्त्वज्ञान का प्रधान साधन है। भागवत में इसे ही मनुष्यों का सबसे उत्तम धर्म–परम धर्म कहा गया है (श्रीमद्भागवत 1/2/6)। भक्तियोग को सबसे उत्तम मार्ग बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं कि कर्म, तपस्या, ज्ञान, वैराग्य, योग, दान, धर्म, तीर्थयात्रा, व्रत आदि अन्य साधनों के द्वारा जो प्राप्त होता है, मेरा भक्त भक्तियोग के द्वारा अनायास ही वह सब प्राप्त कर लेता है (श्रीमद्भागवत 1/20/32)। भागवत में महर्षि व्यास ने कपिल के मुख से देवाहुति के प्रति भक्ति की सारगर्भित व्याख्या करायी है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि वेद विहित कर्म में लगे हुए जनों की भगवान के प्रति अनन्य भाव पूर्वक स्वाभाविकी सात्विक प्रवृत्ति का नाम 'भक्ति' है। इसी को उन्होंने अहैतुकी भक्ति कहा है (श्रीमद्भागवत 3/25/32)। इस अनुभव जन्य अहैतुकी भक्ति का बोध व्रज की गोपियों ने किया था। भक्ति के सभी लक्षण गोपियों के जीवन में विद्यमान है। उनका सर्वस्व श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित है। ऐसी अहैतुकी भक्ति जिन साधनों से प्राप्त होती है वह है– 'गुरु की प्रेम पूर्वक सेवा, अपने को जो कुछ मिल जाये वह सब कुछ भगवान को समर्पित कर देना, भगवद्प्रेमी महात्माओं का सत्संग, भगवान की आराधना, उनकी कथावार्ता में श्रद्धा, उनके गुण एवं लीलाओं का कीर्तन, उनके चरण कमलों का ध्यान और उनके मंदिर, मूर्ति आदि का दर्शन एवं पूजन आदि साधनों से भगवान में स्वाभाविक प्रेम हो जाता है (श्रीमद्भागवत 7/7/30–31)।

श्रीमद्भागवत में भक्तियोग के विवेचन से दो बातें स्पष्ट होती हैं कि भक्त में समर्पण एवं प्रेम दो भावों का समावेश होना अति आवश्यक है। जिस प्रकार भागवत में भगवान श्रीकृष्ण भक्ति में सम्पूर्ण समर्पण की बात कहते हैं उसी प्रकार गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है– 'हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है वह सब मुझे अर्पण कर (श्रीमद्भागवत 9/27/20)। महर्षि पतंजलि ने इसे ही ईश्वर प्रणिधान कहा है (पा. यो.सू. 1/23)। इस प्रकार जब भक्तियोग के महान प्रभाव से भक्त के सारे बन्धन कट जाते हैं और उसका हृदय भगवद्मय हो जाता है (श्रीमद्भागवत 7/7/36)। तैत्तरीय उपनिषद में भी कहा गया है कि भक्तिरस को प्राप्त करके मनुष्य परमानन्दी हो जाता है। (तैत्तरीय उपनिषद 2/7)। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा गया है कि इस रस को प्राप्त करके मनुष्य को अन्य विषयों में रस नहीं रहता (श्रीमद्भगवद्गीता 2/59)।

श्रीमद्भागवत में अष्टांग योग का भी वर्णन प्राप्त होता है। योग का प्रमुख उद्देश्य कैवल्य की प्राप्ति है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभिन्न साधनों का विवेचन किया जाता है, जिससे मनुष्य अविवेक से मुक्त होकर अपनी आत्मा को ज्ञानलोक से आलोकित करता है। इन्हीं उपायों में से एक उपाय 'अष्टांग योग' है, जिसमें शरीर और मन की समस्त क्रियाओं का निरोध कर जीवात्मा की मुक्ति ही मुख्यतः प्रतिपाद्य है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार 'यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि' (पा.यो.सू. 2/29)। अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ साधन योग के हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार को बहिरंग योग कहा जाता है और इसके विपरीत धारणा, ध्यान, समाधि को अन्तरंग योग कहा जाता है। श्रीमद्भागवत में भी भगवान कपिल अपनी माता को अष्टांग योग का मार्ग बताते हुए कहते हैं– योगस्य लक्षणं वक्ष्ये सबीजस्य नृपात्मजे। मनो येनैव विधिना प्रसन्नं याति सत्यपथम् (श्रीमद्भागवत 3/28/1)। अर्थात् माता जी! अब मैं तुम्हें सबीज (ध्येयस्वरूप के आलम्बन से युक्त) योग का लक्षण बताता हूँ, जिसके द्वारा चित्त शुद्ध एवं प्रसन्न होकर परमात्मा के मार्ग में प्रवृत्त हो जाता है। महर्षि पतंजलि भी श्रीमद्भागवत में बतायी गई इस बात का समर्थन करते हैं कि अष्टांग योग से चित्तशुद्धि होती है और ज्ञान का प्रकाश प्रकट हो जाता है (पा.यो.सू. 2/28)।

अष्टांग योग में प्रथम दो अंग यम और नियम पूर्णतः मनुष्य के नैतिक विकास के लिए उत्तरदायी है इनका सम्बन्ध मनुष्य के आंतरिक जीवन से है। महर्षि पतंजलि ने यम के पांच अंग बताये हैं– अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः (पा.यो. सू. 2/30)। श्रीमद्भागवत में यम की संख्या 12 बतायी गई है– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, असंगता, लज्जा, असंचय, आस्तिकता, ब्रह्मचर्य, मौन, स्थिरता, क्षमा और अभय (श्रीमद्भागवत 11/20/33)। महर्षि पतंजलि के अनुसार नियम की संख्या पांच हैं– शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः (पा.यो.सू. 2/32)। श्रीमद्भागवत में नियम की संख्या 12 बतायी गई है– शौच, जप, तप, हवन, श्रद्धा, अतिथि सेवा, पूजा, तीर्थयात्रा, परोपकार की चेष्टा, संतोष और गुरु सेवा (श्रीमद्भागवत 11/20/34)।

आसन का सामान्य अर्थ है बैठना। परन्तु योग के संदर्भ में शरीर और उसके अंगों की विशिष्ट स्थिति को आसन कहते हैं। महर्षि पतंजलि के अनुसार 'स्थिर और सुख पूर्वक बैठना ही आसन है' (पा.यो.सू. 2/46)। भागवत में भी आसन का यही भाव प्रतिपादित किया गया है– 'सदाऽऽसनजयस्थैर्य' अर्थात् उत्तम आसनों का अभ्यास करके स्थिरता पूर्वक बैठना चाहिए (श्रीमद्भागवत 3/28/5)। देवी सती ने भगवान शिव के अपमान होने पर जब शरीर छोड़ने का निश्चय किया तब वे भी आसन स्थिर करके योग मार्ग में स्थित हुई (श्रीमद्भागवत 4/4/24–25)। जब आसन में स्थिरता का भाव आ जाता है तब किसी भी प्रकार के द्वन्द विचलित नहीं कर पाते। इसीलिए महर्षि पतंजलि कहते हैं– ततोद्वन्द्वानभिघातः (पा.यो.सू. 2/48)।

प्राण शक्ति के नियमन और विस्तृतीकरण करने का नाम प्राणायाम है। भागवत में प्राण शक्ति का उद्भव विराट पुरुष के नासाछिद्रों से माना गया है (श्रीमद्भागवत 2/6/2)। शास्त्रोक्त विधि से अपने स्वाभाविक श्वास और प्रश्वास को रोक लेना प्राणायाम कहलाता है ('तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयो र्गतिविच्छेदः प्राणायामः' पा.यो.सू. 2/49)। प्राणायाम के तीन भेद होते हैं– पूरक, रेचक, कुम्भक। श्रीमद्भागवत के अनुसार पहले आसन को जीतें फिर प्राणायाम के अभ्यास के लिए कुश, मृगचर्मादि से युक्त आसन बिछाकर शरीर को स्थिर रखते हुए सुख पूर्वक बैठकर अभ्यास करें। आरम्भ में पूरक, कुम्भक और रेचक क्रम से प्राण के मार्ग का शोधन करें जिससे चित्त स्थिर और निश्चल हो जाता है (श्रीमद्भागवत 3/28/9)। माता सती ने इसी विधि से योगाग्नि प्रकट कर अपने शरीर को छोड़ा था।

इन्द्रिय वृत्तियों का अपने–अपने विषयों का आहार न करके अपने–अपने केन्द्र में स्थिर हो जाना ही प्रत्याहार है। जाबालदर्शनोपनिषद् के अनुसार – स्वभाव से ही विषयों में विचरण करने वाली इन्द्रियों को बल पूर्वक विषयों से लौटा लाने को प्रत्याहार कहते हैं (जाबालदर्शनोपनिषद् 7/1)। श्रीमद्भागवत में भी प्रत्याहार की इस प्रक्रिया में अन्य ग्रन्थों की तरह अपने

चंचल मन को समेटकर भगवान श्रीकृष्ण में लगाना है। भगवान श्रीकृष्ण का तात्पर्य है कि अंतरात्मा में स्थिर मुझ परमात्मा में ही मन को समेटकर एकाग्र करें। वे कहते हैं 'इन्द्रियों को मन के द्वारा विषयों से हटाकर अपने हृदय में ले जाना प्रत्याहार है' (श्रीमद्भागवत 3/28/5)। महर्षि पतंजलि भी भागवत में बताये गये प्रत्याहार प्रक्रिया का पूर्ण समर्थन करते हैं– स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः (पा.यो.सू. 2/54)। जिस समय समस्त इन्द्रियां विषयों से हटकर श्रीहरि में निश्छल भाव से स्थित हो जाती हैं, उस समय गाढ़ निद्रा मे सोये हुये मनुष्य के समान जीव के रोग–द्वेषादि सारे क्लेश सर्वथा नष्ट हो जाते हैं (श्रीमद्भागवत 3/7/13)। अर्थात् इन्द्रियां पूर्णतः वश में हो जाती हैं (पा.यो.सू. 2/55)।

बहिरंग साधनों के बाद तीन अंतरंग साधनों का आरम्भ होता है। धारणा, ध्यान, समाधि इन तीनों का सम्मिलित स्वरूप संयम कहलाता है (पा.यो.सू. 3/4)। धारणा मुख्यतः ध्यान की पूर्व तैयारी है। धारणा परिपक्व होने पर ही ध्यान में प्रवेश मिलता है। 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा' (पा.यो.सू. 3/1)। अर्थात् किसी स्थान विशेष में चित्त का बाधंना धारणा कहलाता है। महर्षि पतंजलि के अनुसार भागवत में भी कहा गया है– 'मूलाधार आदि किसी एक देश में मन के सहित प्राणों को स्थिर करना धारणा है' (श्रीमद्भागवत 2/28/6)। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करके फिर बुद्धि के द्वारा मन को भगवान के स्थूल रूप में लगाना चाहिए। राजकुमार ध्रुव ने तपस्या करते हुए भगवान के स्थूल रूप की ही धारणा की थी।

धारणा की परिपक्वावस्था का नाम ही 'ध्यान' है। किसी विषय वस्तु पर एकाग्रता या चिंतन की प्रक्रिया ध्यान कहलाती है। भागवत के अनुसार निरन्तर भगवान की लीलाओं का चिंतन और चित्त को उसी में समाहित करना ध्यान है (श्रीमद्भागवत 3/28/6)। यहां भगवान श्रीकृष्ण ही एकामत्र ध्येय हैं। अतः श्रीकृष्ण की लीलाएँ समस्त वृत्तियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। भक्त जब उनकी लीलाओं में निमग्न हो जाता है तब किसी अन्य विषय की ओर उसकी वृत्ति आकर्षित ही नहीं हो पाती। इसीलिए ध्येय में ही अपना मनोयोग इस प्रकार करना कि केवल उसमें ही साधक निमग्न हो, किसी अन्य विषय की ओर उसकी वृत्ति आकर्षित न हो 'ध्यान' कहलाता है। महर्षि पतंजलि भी इसी बात का समर्थन करते हुए कहते हैं– 'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्' (पा.यो.सू. 3/2)।

समाधि योग की एक ऐसी अवस्था है जिसमें योगी चरमोत्कर्ष को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। भागवत में भी ध्यान साधना की अपनी चरम स्थिति में पहुंचने पर समाधि का स्वतः लग जाना बताया गया है– 'समाधानं तथाऽऽत्मनः' अर्थात् निरन्तर भगवान की लीलाओ का चिंतन और उसी में चित्त को समाधिस्थ करना समाधि है (श्रीमद्भागवत 3/28/6)। ध्यान करते–करते चित्त जब ध्येयाकार में परिणत हो जाता है, उसके अपने स्वरूप का अभाव सा हो जाता है, उसकी ध्येय से भिन्न उपलब्धि नहीं होती, उस समय वह ध्यान नही 'समाधि' कहलाता है। भगवान श्रीकृष्ण ही ध्येय हैं उनकी लीलाओं के ध्यान में प्रगाढ़ता आने पर कृष्णस्वरूपानुकार हो जाने पर समाधि की अवस्था प्राप्त होती है। महर्षि पतंजलि भी समाधि के इसी स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं– 'तदेवार्थमात्र निर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः' (पा.यो.सू. 3/3)। भगवान कपिल ने माता देवहूति को इसी प्रकार के समाधि योग का उपदेश दिया था जिससे माता देवहूति योग साधना के द्वारा योगाभ्यास करते हुये समाधि में स्थित हो गयीं। (श्रीमद्भागवत 3/33/27)।

यद्यपि श्रीमद्भागवत में वर्णित अष्टांग योग उपनिषदों और पतंजलिकृत योगसूत्र में प्रतिपादित अष्टांग योग का ही प्रतिनिधित्व करता है, तथापि अपनी मौलिकता एवं विशिष्टता में यह कई नये आयामों को भी प्रकट करता है। इसमें वर्णित अष्टांग योग में भक्ति का सम्पुट है। अतः समाधि साधना तभी सम्भव हो पाती है जब सम्पूर्ण समर्पण हो पाता है। जहां महर्षि पतंजलि समाधि अवस्था में चित्त की वृत्तियों के निरोध की बात करते हैं वहां महर्षि व्यास भागवत में कृष्णमय वृत्ति की अवस्था को समाधि कहते हैं। इस तरह से यह राजयोग और भक्तियोग का अनूठा समन्वय प्रस्तुत करता है।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि शर्मा
अध्यक्ष, योग विज्ञान विभाग
श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार

शब्द ब्रह्म

मनुष्य के अध्यात्म में शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा होते हैं। शब्द के अध्यात्म में शब्द, अक्षर, ध्वनि और विचार होते हैं। शरीर और शब्द दोनों परिचयात्मक हैं, स्थूल हैं। शरीर के साथ नाम, रूप, रंग, जाति, धर्म, देश आदि जुड़ जाते हैं। इसी तरह शब्द के साथ भी रूप और अर्थ जुड़ जाते हैं। विषय का स्वरूप जुड़ जाता है। हम शब्द को पकड़कर रूप की चर्चा में चले जाते हैं। शब्द को छोड़ देते हैं। ओशो ने इसका एक अच्छा उदाहरण दिया है। एक शब्द है राम। कोई राम को गाली देकर देखे। हम शब्द छोड़कर राम में उलझ जाएँगे। वैसे राम एक शब्द ही है और वह भी हमारा बनाया हुआ, पहचान भी मानव निर्मित है। मूल में तो राम एक तरह की ध्वनि ही है। भारत में इस ध्वनि के लिए राम शब्द का उपयोग होता है। हर भाषा में इस ध्वनि का अपना अर्थ होगा।

अक्षर–सृष्टि

हमारी सृष्टि अक्षर सृष्टि कहलाती है। भाषा भी अक्षर–सृष्टि ही है। जिस प्रकार हमारी सृष्टि में कुछ भी नष्ट नहीं होता, वैसे ही अक्षर को फिर से व्यंजन नहीं बनाया जा सकता। हमारे अक्षरों का निर्माण ध्वनियों पर ही आधारित है। मंत्रों का भी अर्थ नहीं किया जा सकता। बीज मंत्रों का भी भाव–अर्थ नहीं किया जा सकता। ये भी ध्वनि समूह हैं और स्पन्दन की गति के अनुरूप शरीर के स्पन्दन को प्रभावित करते हैं। स्पन्दन ही दोनों के अस्तित्व का आधार विज्ञान है। हर अक्षर के मूल में ध्वनि है और यह भी आवश्यक नहीं है कि हर ध्वनि का अर्थ स्पष्ट ही हो।

व्यक्ति विचारों के सहारे बड़ा नहीं होता। विचार–विमर्श किसी निर्णय पर नहीं पहुँचता। निर्णय केवल प्रयोग से आते हैं। विज्ञान प्रयोग पर टिका है। वह बाहरी तत्त्वों पर उपकरणों की सहायता से प्रयोग करता है। धर्म भी प्रयोग पर टिका है। व्यक्ति स्वयं उपकरण हो जाता है। पर दर्शन प्रयोग नहीं करता। केवल बातें करता है। परिणाम शून्य रहता है। हमारा सम्पूर्ण मंत्र शास्त्र भी ध्वनि के प्रयोगों का परिणाम है। भले ही ध्वनियाँ हमारी समझ में न आएँ। किसी मंत्र का अर्थ दिखाई न दे, किन्तु परिणाम हमारे सामने होते हैं। हमारे सभी ऋषि यह भी कहते हैं कि ध्यान में बाहरी ज्ञान और दूसरों के अनुभव सहायता नहीं कर सकते।

हमारे विचार भी ध्वनियों का समूह ही हैं जो हमारे प्राणों की गतिविधियों पर आधारित हैं। प्राणों के बारे में हम क्या समझ पाते हैं। न ही विचारों का भावनात्मक पहलू हम देख सकते हैं। वह अनुभव किया जाता है और स्वीकारा भी जाता है। उसे नकार नहीं सकते। मन की इच्छा को नकार नहीं सकते जिसके कारण विचार उठते हैं। मन के मूल में कामना रहती है। ध्वनि के मूल में भी कामना रहती है। यह हमारे मूल भावों के अनुरूप प्रकट होती है। इसी के अनुरूप शब्द ध्वनित होता है। एक ही शब्द अलग–अलग भावों में अलग–अलग स्वर से उच्चरित किया जाता है। ध्वनि के भी अर्थ बदल जाते हैं और शरीर की क्रियाएँ भी।

ध्वनियाँ

एक बात और महत्त्वपूर्ण है। ध्वनि सदा नाभि से उठती है। यह विसर्ग अथवा व्यंजन का क्षेत्र कहा जाता है। यही विसर्ग कण्ठ में जाकर अकार से मिलता है – अक्षर बनता है। इसे पुनः विसर्ग नहीं बना सकते। हमारा शरीर भी नाभि के माध्यम से ही तैयार होता है। माँ के पेट में नाभि से जुड़ा रहता है। उसका सारा ज्ञान ध्वनि के माध्यम से ही अर्जित होता है। अतः नाभि ही ध्वनियों का उदगम केन्द्र है। सारी ध्वनियां नाभि में आकर ही मिलती हैं।

यह एक सूत्र है। ध्वनियां प्राकृतिक होती हैं। शब्द तो निर्मित किए जाते हैं। अतः वे नाभि तक नहीं पहुँच पाते हैं। मस्तिष्क से निकलते हैं और वहीं जाकर मिलते हैं।

हम शब्दों के सहारे जीते हैं। उनकी जो ध्वनियां निकलती हैं उनको नहीं जान पाते। तब शब्द–ब्रह्म कैसे समझ में आएगा। ओंकार की ध्वनि का कई प्रकार से अभ्यास कराया जाता है ताकि इसके स्पन्दन नाभि में अनुभव किए जा सकें।

विभिन्न मंत्रोच्चार के माध्यम से शब्द और ध्वनियों को समझाया जाता है। जड़ ध्वनियां भी इस ज्ञान में सहयोगी होती हैं। घंटा, झालर जैसी तरंगित ध्वनियां भी शरीर में अपना मार्ग प्रकट करने में सहायक होती हैं। इस प्रकार शरीर के भीतर होने वाले अनाहत नाद को अनुभव किया जा सकता है।

एक बात निश्चित है। जो कुछ अपने आप घटित होता है, वही प्राकृतिक है। प्रयत्न हमारे होते हैं। प्रयत्न से भीतर की समझ प्राप्त नहीं हो सकती। स्वयं को सभी प्रयत्नों से, विचारों से मुक्त करना आवश्यक है। सारा ज्ञान व्यक्ति बाहर से ही बटोरता है। सारे प्रयत्न बाहर के लिए उपयोगी होते हैं।

सारे प्रयत्न का केन्द्र मन है। वहां स्मृति और कल्पना का ही आधार रहता है। मन अतीत और भविष्य में भटकता है। वर्तमान खो जाता है। प्रयत्न एक गतिविधि है जो भीतर जाने के लिए बाधा बन जाता है।

जो भीतर है उसे प्रकट करना हमारा लक्ष्य है। इसके लिए मार्ग बनाना पड़ेगा। जो भीतर है उसे खाली करना पड़ेगा। विचार करना ही यथार्थ का मार्ग छोड़ना है। शब्द जाल में उलझना है। इसे शान्त करना पहली आवश्यकता है।

– सुरेन्द्र कुमार जोशी
सेवानिवृत्त आर.ई.एस.
सूरतगढ़, ज़िला श्री गंगानगर

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा माता मन्दिर ओखला में नवमीं उत्सव धूमधाम से मनाया गया

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा माता मन्दिर ओखला में शारदीय नवरात्र में नवमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। नवरात्रों के दौरान मन्दिर में विधि–विधान से पूजा–अर्चना की गयी एवं नौवें दिन हवन किया गया। इस अवसर पर सभा के कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी जी, उप प्रधान श्री रमेश आनन्द जी, कार्यालय मंत्री श्री डी.आर.मदान जी, प्रबन्धक श्री अरूण शर्मा एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इसके बाद विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। भण्डारे में सैंकड़ों लोगों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

(इन्द्र मोहन गोस्वामी)
कार्यवाहक प्रधान

(डी. आर. मदान)
कार्यालय मंत्री

सभा के पूर्व प्रधान श्रद्धेय पंडित मोहनलाल जी की 19वीं पुण्यतिथि

सभा के पूर्व प्रधान, श्रद्धेय पंडित मोहनलाल जी की 19वीं पुण्यतिथि 30–8–2018 को सभा के मुख्य कार्यालय में मनाई गई। सभा के कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी जी एवं कार्यालय मंत्री श्री डी.आर.मदान जी को गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म माडल स्कूल के नये विंग आर. के. मायर जूनियर विंग के उदघाटन के लिए जालन्धर जाना पड़ा। सभा के वरिष्ठ उप प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण जी, उप प्रधान श्री रमेश आनन्द जी एवं संयुक्त मंत्री श्री वीरेन्द्र कत्याल जी एवं सभा के कर्मचारियों द्वारा पूज्य पंडित जी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। सभी ने पूज्य पंडित जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की एवं कहा कि हमें पंडित जी के बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिए। उनके अधूरे कार्य को पूरा करना चाहिए। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। गायत्री मंत्र का जाप किया गया एवं उसके बाद भण्डारे का आयोजन किया गया।

(इन्द्र मोहन गोस्वामी)
कार्यवाहक प्रधान

(डी. आर. मदान)
कार्यालय मंत्री

एस.डी. फुल्लर्वान स्कूल के अन्तर्गत जी.जी.डी.एस.डी. स्कूल के जूनियर विंग का उद्घाटन

एस.डी. फुल्लर्वान गर्ल्स सी.सै. स्कूल के प्रांगण में स्थित जी.जी.डी.एस.डी. माडल स्कूल, न्यू रेलवे कॉलोनी, जालन्धर के जूनियर विंग के नवीनीकरण उपरान्त उद्घाटन किया गया। इस विंग का नाम इस क्षेत्र के जाने–माने उद्योगपति व समाज सेवक स्वर्गीय श्री आर.के. मायर जी के नाम पर रखा गया। इस विंग के नवीनीकरण के लिए स्वर्गीय श्री आर.के. मायर जी के परिवार ने 13 लाख रुपए की दानराशि प्रदान की। नवीनीकरण का कार्य लगभग तीन मास में पूर्ण कर स्कूल प्रबन्धन ने कीर्तिमान स्थापित किया। इस विंग का उद्घाटन 30 अगस्त 2018 को माननीय श्री आई.एम.गोस्वामी जी, कार्यकारी प्रधान, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर डॉ. देशबन्धु जी, श्री गुरुदत्त शर्मा जी, डॉ. नन्दकिशोर शर्मा, श्री आर.डी. मदान, श्री मनिन्दर शर्मा जी आदि सभा के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ–साथ श्रीमती मनोरमा मायर, श्री अमित मायर, श्री सुरेन्द्र सेठ, पूर्व वरिष्ठ पत्रकार दैनिक भास्कर श्री बलवंत राय नाथ, मेयर बठिंडा उपस्थित हुए। श्री आर.के. मायर जी की स्मृति में समर्पित इस विंग का उद्घाटन हवन यज्ञ से हुआ। तत्पश्चात् सभा के पूर्व प्रधान श्रद्धेय पंडित मोहन लाल जी, पूर्व गृह एवं वित्त मन्त्री पंजाब व श्री आर.के. मायर जी को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर स्कूल के विद्यार्थियों ने सरस्वती वन्दना व नृत्य, गीत के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रिंसीपल श्रीमती नीरज सैनी जी ने अतिथियों का अभिनन्दन एवं स्वागत किया तथा स्वर्गीय श्री मायर जी की स्मृति में मायर परिवार की ओर से नारी शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयास की सराहना की। सभा की ओर से डॉ. देशबन्धु जी ने मायर परिवार का स्कूल से जुड़ने पर और शिक्षा प्रदान करने में सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी ने अपना आशीर्वाद देते हुए इस स्कूल के उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा प्रिंसीपल मैडम के अथक प्रयास की सराहना की। श्री सुरेन्द्र सेठ जी ने भी स्कूल के द्वारा प्रदान किए जाने वाले ज्ञान व नैतिक मूल्यों की सराहना की। अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। श्री देशबन्धु जी व प्रिंसीपल मैडम ने अतिथियों, अभिभावकों का स्कूल में आने पर आभार प्रकट किया। छात्र कलाकारों को पुरस्कार प्रदान किए गए। समारोह समाप्ति पर सभी अतिथियों एवं अभिभावकों के लिए भोजन–व्यवस्था की गई।

नीरज सैनी
प्रिंसीपल
एस.डी. फुल्लर्वान सी.सै. स्कूल, जालन्धर

श्रद्धांजलि

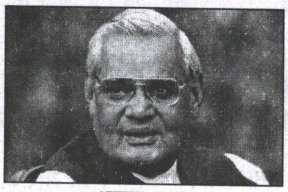

भारत रत्न
श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजीकृत) एवं इसकी अन्तरंग संस्थाएँ–श्री सनातन धर्म महाबीर दल पंजाब व सनातन धर्म शिक्षा समिति के समस्त पदाधिकारी व सदस्य भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, जन–जन के हृदय सम्राट, भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के महाप्रयाण पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं। भारत माता के सच्चे सपूत श्री वाजपेयी जी अद्भुत विलक्षणता के शिखर पुरुष थे। कुशल राजनेता होने के साथ–साथ वे एक श्रेष्ठ कवि और पत्रकार भी थे। उनका अपना एक स्वस्थ सामाजिक व राजनीतिक दर्शन रहा है। वे मानव मूल्यों के प्रबल पक्षधर रहे हैं। राजनीति को मूल्य धर्मी बनाने में आजीवन प्रयासरत रहे। उन्होंने देश की विदेश नीति को नई दिशा प्रदान की। संयुक्त राष्ट्र संघ में 1977 में मातृभाषा हिन्दी में उद्बोधन कर समस्त विश्व को मंत्र मुग्ध किया। भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बनाया। कृतज्ञ राष्ट्र उनके महनीय योगदान का सदा ऋणी रहेगा। उन्हें राजनीतिक स्वच्छता के प्रतिमान के रूप में सदा याद किया जाएगा। हम दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा–सुमन समर्पित करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे राजनीति के इस पुरोधा संत की महान आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें।

डॉ. शिव कुमार
प्रधान, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब

डॉ. देशबन्धु
महामंत्री, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब

दिवंगत श्री गुरुदत्त शर्मा जी

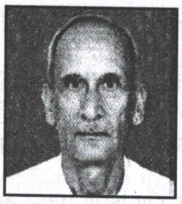

श्री गुरुदत्त शर्मा जी

श्री गुरु दत्त शर्मा जी का जन्म 6 जून, 1933 ई. को रसूलपुर ज़िला पेशावर (पाकिस्तान) में हुआ। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा रसूलपुर के प्राइमरी स्कूल से प्राप्त की। सन् 1947 में भारत विभाजन के समय आप अपने पिता श्री बाबूराम जी के साथ ज़िला होशियारपुर के गाँव बस्सी दौलत खाँ में आ बसे। तभी लायलपुर (पाकिस्तान) से विस्थापित सनातन धर्म स्कूल भी इसी गाँव में पुनः स्थापित हुआ और स्कूल का नया नाम हुआ – 'लायलपुर सनातन धर्म हाई स्कूल'। इसी विद्यालय से आपने मैट्रिक की। डी.ए.वी. कॉलेज होशियारपुर से आप स्नातक हुए। वैजनाथ (हिमाचल प्रदेश) से आपने बी.एड. की डिगरी प्राप्त की। 1957 में आपने अपने ही गाँव के उपर्युक्त विद्यालय को अध्यापक के रूप में अपना कर्मक्षेत्र बनाया। 1975 में इसी विद्यालय के मुख्याध्यापक बने। 1992 में सरकारी कागज़ों में तो सेवा निवृत्त हुए परन्तु विद्यालय को सीनियर सैकेंडरी स्तर की मान्यता दिलवा कर कर्मयोगी के रूप में वहीं अपनी सेवाएँ देते रहे। वर्ष 2000 में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा आपको स्कूल के प्रबन्धन का कार्यभार सौंपा गया। प्रबन्धक के रूप में आप आजीवन विद्यालय के विकास को समर्पित रहे। अपने बहु–आयामी व्यक्तित्व के कारण आप अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के आप उपप्रधान थे। आप श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के महामन्त्री, गो.ग.द.स.ध. कॉलेज हरियाणा के महासचिव, लायलपुर सनातन धर्म सी.स. स्कूल बस्सी दौलत खाँ एवं सनातन धर्म फुल्लरवान कन्या विद्यालय के प्रबन्धक, स. ध. को. एजु. स्कूल शाम चौरासी एवं एच.एस.डी. कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, गुरदासपुर की प्रबन्धक कमेटी के सदस्य एवं श्री शिव मन्दिर प्रबन्धक कमेटी बस्सी दौलत खाँ के प्रधान पदों पर रहे।

दिनांक 12 नवंबर 2018 को आप अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर प्रभु चरणों में जा विराजे हैं। आपके देहावसान से श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा एवं शिक्षा जगत को गहन क्षति हुई है। हम सनातन परिवार के समस्त सदस्य दिवंगत आत्मा को श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे गुरुदत्त शर्मा जी की पुण्य आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें।

अनिल हांडा, प्राचार्य
एल. एस. डी. सी. सै. स्कूल, बस्सी दौलत खाँ

दिवंगत श्री आर.के.कौशिक जी

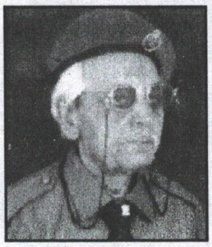

श्री आर.के.कौशिक जी

श्री आर.के. कौशिक जी का जन्म 24 जुलाई, 1947 को श्री एन.डी.कौशिक जी के घर मोदी नगर, उत्तर प्रदेश में हुआ। स्कूल एवं कॉलेज स्तर की शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् 8 मार्च, 1964 को उनका श्रीमती सरोज कौशिक के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। वह हरियाणा प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत रहे। सेवाधर्म को अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानते हुये उन्होंने 28 फरवरी, 2002 को चीफ फार्मसिस्ट के पद से सेवा–निवृत्ति ले ली थी। सरकारी सेवा में होते हुये भी उन्होंने श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब एवं सनातन धर्म महावीर दल, पंजाब को अपनी निस्वार्थ सेवायें प्रदान की। वह एक सच्चे समाजसेवी और धर्मानुरागी व्यक्ति थे। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के उप–प्रधान एवं सचिव पद के साथ–साथ आप महावीर दल के अनेक प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत रहे। महावीर दल यमुनानगर ज़िला प्रधान के रूप में आपने अनेक वर्षों तक कार्य किया तथा जीवन पर्यन्त समाज की सेवा करते रहे।

पंडित आर.के. कौशिक जी जन सेवा को ही सच्चा सनातन धर्म स्वीकार करते रहे हैं। उन्होंने जन सेवा को सर्वाधिक अधिमान देते हुये 285 नेत्र शिविर और 179 स्वास्थ्य शिविर तथा 85 रक्तदान शिविर लगाये जो अपने आप में एक रिकार्ड है। कुम्भ मेलों, कपाल मोचन मेलों एवं कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण मेलों आदि के अवसरों पर वह भण्डारे की सामग्री एकत्रित करने के साथ–साथ कार्यदल के नेता के रूप में भी अपना दायित्व निभाते रहे। उन्होंने अनेक गरीब कन्याओं का विवाह करवाया। जीवन भर की उत्कृष्ट सेवाओं के आधार पर हरियाणा के महामहिम राज्यपाल तथा हरियाणा के विधानसभा अध्यक्ष के करकमलों द्वारा उन्हें शॉल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। ज़िला स्तर पर वह अनेक बार ज़िला प्रशासन द्वारा अपनी रक्तदान और समाजसेवा के लिये सम्मानित हुये।

दिनांक 29 मार्च, 2018 को पंडित आर.के. कौशिक जी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर प्रभु चरणों में विलीन हो गये हैं। कौशिक जी के निधन से सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब एवं सनातन धर्म महावीर दल, पंजाब की अपूरणीय क्षति हुई है। हम सनातन परिवार के सदस्य दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि देते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे कौशिक जी की दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें।

सतबंत सिंह सूदन,
सनातन धर्म महावीर दल, यमुनानगर

महंत स्वरूपबिहारी शरण
प्रधान, सनातन धर्म महावीर दल

सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार में त्याग मूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की 59वीं पुण्यतिथि मनाई गई : दैनिक हरिश्चन्द्र उवाच 11-6-18

गोस्वामी गणेश दत्त महाराज थे कर्मयोगी और तपस्वी : मदन कौशिक

हरिद्वार 10 जून। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त महाराज की 59वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने उनका भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा कि गोस्वामी जी महान कर्मयोगी और तपस्वी थे। वे महामानव थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अहम कार्य किया। कौशिक ने श्री मद्भागवत कथा सप्ताह तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह में शिरकत करते हुए कहा कि त्यागमूर्ति गोस्वामी जी के विचार हर युग में प्रासंगिक रहेंगे।

सनातन धर्म सभा के कार्यवाहक प्रधान इन्द्र मोहन गोस्वामी ने कहा कि त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी महाराज उत्तर भारत की अनेक धार्मिक एवं शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार के भी संस्थापक थे। उन्होंने छुआछूत का भेद मिटाया। मंच संचालक डॉ देश बन्धु द्वारा त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी के जीवन तथा कार्यों का परिचय दिया गया। समस्त कार्यक्रम प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान डॉ शिव कुमार शर्मा के आशीर्वाद से कार्यवाहक प्रधान आई०एम० गोस्वामी, महामंत्री उपेन्द्र शर्मा, डॉ देशबन्धु तथा गोस्वामी सरदारी लाल, उपप्रधान के०के० अग्रवाल, सुधीर गुप्ता, [illegible] कालरा, कंसल, दिल्ली कार्यालय के सचिव डी०आर० मदान, श्री सनातन धर्म महावीर दल के प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण, सप्त ऋषि आश्रम के प्रशासक डॉ० आर०पी० [illegible], प्रबंधक विनोद सैनी एवं सक्सेना के सहयोग से हुआ।

गोस्वामी जी की 59वीं पुण्यतिथि बहुत श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। 3 जून से श्रीमद् भागवत सप्ताह का आरंभ किया गया। प्रसिद्ध कथावाचक पंडित दीनदयाल भारद्वाज ने 7 दिन बहुत मनोयोग से कथा की। भोग के पश्चात सायंकाल धार्मिक एवं सांस्कृतिक [illegible] आधारित नृत्य का कार्यक्रम हुआ। आज यज्ञ के पश्चात गोस्वामी जी के समाधि स्थल पर सभी श्रद्धालु [illegible] ने माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि समारोह में हरिद्वार के अनेक महात्माजन पधारे। जिन्होंने अपनी ज्ञानमय वाणी से सभा को संबोधित किया। जूना अखाड़ा के राष्ट्रीय सचिव स्वामी देवानंद सरस्वती ने कर्म के विषय में विस्तार से बताते हुए जिसके मत लोक के साथ परलोक में भी साथ जाता है। शेष तो अकर्म है। जो स्वार्थवश ही होते हैं। महन्त [illegible] स्वामी [illegible] भारतीय, महन्त कमलदास, बाबा कमलदास, महन्त जनमानन्द, महन्त [illegible] महन्त [illegible] गिरि, महन्त भुवनेश्वर पुरी, महन्त इन्द्रानन्द सरस्वती एवं इन्द्रदत्त शास्त्री ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की उत्तराखंड, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश तथा जम्मू कश्मीर की शाखाओं से पांच सौ से ज्यादा प्रतिनिधि समारोह में शामिल हुए। श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के अध्यक्ष [illegible] सनातन धर्म संस्थाओं में से उत्तम महिला प्राध्यापक, एसोसिएट प्रोफेसर श्रीमती सुनीता [illegible] उत्तम पुरुष प्राध्यापक, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० भजन शर्मा तथा शिक्षक पवन शास्त्री को महामना मदन मोहन मालवीय स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। सा०ध० संस्थानों के उत्तम छात्र के रूप में छात्रा सुश्री महक को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। भजन मंडली के भजनों से कार्यक्रम का वातावरण श्रद्धामय हो उठा।

DATE: 12-6-18 THE. PIONEER.

Goswami Ganesh Dutt remembered in Haridwar

PNS ■ HARIDWAR

The members of the religious fraternity from across the country have congregated at Saptrishi Ashram in Haridwar to pay homage to the great educationist Goswami Ganesh Dutt Maharaj on his 59th death anniversary.

The propagator of Sanatan dharma, Ganesh Dutt was an Indian administrator who did much to improve education and health service in pre-Independence India in several provinces. The seven-day memorial programme witnessed recitation from scriptures and discourses on his monumental contribution in the realm of education in the colonial days.

While paying glowing tribute to the educationist, the State Urban Development Minister Madan Kaushik said that Ganesh Dutt Maharaj was a disciple of Madan Mohan Maliya. "He was given the mantra diksha (initiation) by Bharat Ratna Madan Mohan Malviya himself. He played an instrumental role in reviving the Sanatan Dharma in the country and abroad. His values of education are still relevant and they indeed are benchmarks for the present generation," he said. A meritorious student Mahak from Jalandhar received the Ganesh Dutt Samriti Samman on the occasion.

Dwelling on the greatness of the legend, a noted educationist Inder Mohan Goswami said that it is difficult to find an educationist of the calibre of Ganesh Dutt nowadays when the teachers are working for money sans any commitment to the ideology that fired many during those glorious time.

Several speakers also dwelt on different facets of the legendary educationist and the life and his teachings, saying that his life still beckons them despite years having passed since he left the scene. Among those who were present on the occasion included Mahant Mohan Dass Ramayani, K K Agarwal, Sudhir Gupta and Baba Kamaldas.

Passages from Bhagawad Gita were recited and a large number of the city residents paid homage to the educationist at his Samadhi.

पुण्यतिथि पर गोस्वामी गणेश दत्त का किया भावपूर्ण स्मरण

■ हरिद्वार। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने उनका भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा कि गोस्वामी जी महान कर्मयोगी और तपस्वी थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अहम कार्य किया।

सनातन धर्म सभा के कार्यवाहक प्रधान इन्द्र मोहन गोस्वामी ने कहा कि त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त महाराज ने छुआछूत का भेद मिटाया। डा. देश बन्धु द्वारा गणेश दत्त के कार्यों का परिचय दिया गया। इस अवसर पर पंडित दीनदयाल भारद्वाज ने श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण कराया। इसके बाद गोस्वामी जी के समाधिस्थल पर श्रद्धांजलि दी।

जूना अखाड़ा के राष्ट्रीय सचिव स्वामी देवानंद सरस्वती ने कहा कि कर्म का फल व्यक्ति के लोक के साथ परलोक में भी साथ जाता है। शेष तो अकर्म हैं। जो स्वार्थवश ही होते हैं। महन्त मोहनदास रामायणी, स्वामी अनीता भारती, महन्त कमलदास, बाबा कमलदास, महन्त जमनानन्द, महन्त सोमेश्वरानंद, महन्त दीनदयाल गिरी, महन्त भुवनेश्वर पुरी, महन्त इन्द्रानन्द सरस्वती एवं इन्द्रदत्त शास्त्री ने भी इस अवसर पर विचार व्यक्त किए।

श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के तत्वावधान में सनातन धर्म संस्थाओं में से उत्तम महिला प्राध्यापक, एसोसियेट प्रोफेसर श्रीमती सुधीता भल्ला, उत्तम पुरुष प्राध्यापक, एसोसियेट प्रोफेसर डा. अजय शर्मा तथा शिक्षक पवन शास्त्री को महामना मदन मोहन मालवीय स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

हरिद्वार : सप्तऋषि आश्रम में गोस्वामी गणेश दत्त की पुण्यतिथि पर प्रतिभाओं को सम्मानित करते पदाधिकारी।

राष्ट्रीय सहारा - 11-6-2018

देहरादून | सोम

त्याग की मूर्ति थे गणेशदत्त गोस्वामी

अमर उजाला ब्यूरो

हरिद्वार। कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने कहा कि गणेश दत्त गोस्वामी महान कर्मयोगी और तपस्वी थे। वे महामानव थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार- प्रसार के लिए अहम कार्य किया।

वे रविवार को श्री सनातन धर्म प्रचारिणी सभा आश्रम में गणेशदत्त गोस्वामी की पुण्यतिथि पर आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे।

सनातन धर्म सभा के कार्यवाहक प्रधान इंद्र मोहन गोस्वामी ने कहा कि गोस्वामी गणेश दत्त महाराज ने उत्तर भारत की अनेक धार्मिक एवं शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार के भी संस्थापक थे। उन्होंने छुआछूत का भेद मिटाया। मंच संचालक डॉ देश बंधु ने गणेश दत्त के जीवन और कार्यों के बारे में बताया। इस दौरान कार्यवाहक प्रधान आईएम गोस्वामी, महामंत्री उपेंद्र शर्मा, गोस्वामी सरदारी लाल, उपप्रधान केके अग्रवाल, सुधीर गुप्ता, महेंद्र कालरा, कंसल, डीआर मदान, सनातन धर्म महावीर दल के प्रधान महंत स्वरूप बिहारी शरण, सप्तऋषि आश्रम के प्रशासक डा. आरपी विज, प्रबंधक विनोद सैनी आदि ने विचार रखे।

सप्तऋषि आश्रम के संस्थापक गोस्वामी पंडित गणेशदत्त की पुण्य तिथि पर रविवार को संस्था के लोगों को सम्मानित किया गया। ● हिन्दुस्तान

त्याग की मूर्ति थे गोस्वामी गणेश दत्त : कौशिक

हरिद्वार: कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने कहा कि गोस्वामी गणेश दत्त महान कर्मयोगी और तपस्वी थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अहम कार्य किया। मदन कौशिक ने ये बातें श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक गोस्वामी गणेश दत्त महाराज की 59वीं पुण्यतिथि पर कहीं।

रविवार को सनातन धर्म सभा के कार्यवाहक प्रधान इंद्रमोहन गोस्वामी ने कहा कि त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त महाराज उत्तर भारत की अनेक धार्मिक एवं शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार के भी संस्थापक थे। (जासं)

गोस्वामी गणेश दत्त को किया याद

हरिद्वार | हमारे संवाददाता

पुण्यतिथि

- श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के थे संस्थापक
- कैबिनेट मंत्री बोले, कर्मयोगी और तपस्वी थे गणेश दत्त

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त की 59वीं पुण्यतिथि सप्तऋषि आश्रम में मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अथिति कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने कहा कि वे एक महान कर्मयोगी और तपस्वी थे। शहरी विकास मंत्री ने कहा कि उन्होंने शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए अहम कार्य किया।

रविवार को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त की 59वीं पुण्यतिथि शहरी पर आयोजित समारोह में विकास मंत्री ने मदन कौशिक में शिरकत करते हुए कहा कि गोस्वामी गणेश दत्त जी के विचार हर युग में प्रासंगिक रहेंगे। सनातन धर्म सभा के कार्यवाहक प्रधान इन्द्र मोहन गोस्वामी ने कहा कि गोस्वामी गणेश दत्त ने समाज से छुआछूत का भेद मिटाने में अग्रणी भूमिका निभाई।

कार्यक्रम में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की उत्तराखंड, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश तथा जम्मू कश्मीर की शाखाओं से पांच सौ से ज्यादा प्रतिनिधि समारोह में शामिल हुए।

कार्यक्रम के दौरान में छात्रा सुश्री महक को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम में कार्यवाहक प्रधान आईएम. गोस्वामी, महामंत्री उपेन्द्र शर्मा, डॉ. देशबन्धु तथा गोस्वामी सरदारी लाल, उप प्रधान केके अग्रवाल, सुधीर गुप्ता, महेन्द्र कालरा, कंसल, दिल्ली कार्यालय के सचिव डीआर.मदान, श्री सनातन धर्म महावीर दल के प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण, सप्तऋषि आश्रम के प्रशासक डॉ. आर.पी विज, प्रबंधक विनोद सैनी, महन्त मोहनदास रामायणी, स्वामी अनीता भारती, महन्त कमलदास, बाबा कमलदास, महन्त जमनानन्द, महन्त सोमेश्वरानंद, महन्त दीनदयाल गिरी, महन्त भुवनेश्वर पुरी आदि मौजूद रहे।

डॉ. नन्द किशोर शर्मा, प्रधान संपादक
10, अशोक विहार, महेश नगर
अम्बाला छावनी - 133001
मो. 9896589890, 8708534636

डॉ. देशबन्धु,
1117, प्रभु प्रेमपुरम, जगाधरी रोड़,
अम्बाला छावनी - 133001
मो. 9812053283

सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा प्रकाशित की जा रही ''सनातन संवर्धिनी'' नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/- रू. (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही है।

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

गौशाला हेतु दान संकल्प

मैं ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में संचालित गौशाला के लिए रुपये .... (शब्दों में) .... की दानराशि प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ। मैं यह राशि सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ/रही हूँ।

हस्ताक्षर

एस.डी. फुल्लर्वान गर्ल्स सी.सै. स्कूल के जी.जी.डी.एस.डी. जूनियर विंग के दिनांक 30 अगस्त 2018 को आयोजित उद्घाटन समारोह की झलकियाँ

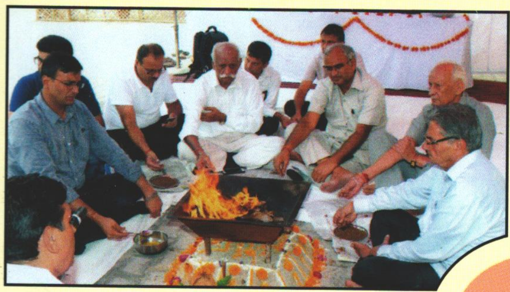

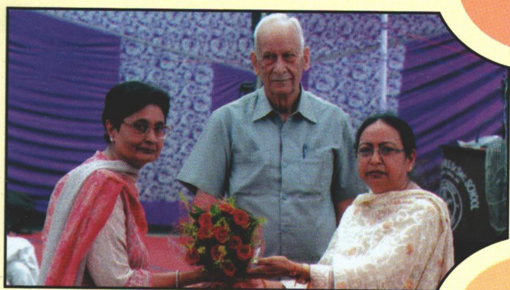

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की पुण्य तिथि दिनांक 10 जून, 2018 को सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में आयोजित विभिन्न समारोहों की झलकियाँ